राष्ट्रीय मूल्य, चरित्र एवं नेतृत्व

तीन दिवसीय प्रशिक्षण मॉड्यूल

2025-26

राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान राजस्थान (जयपुर)

मनीष गोयल (IAS)
निदेशक,
राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी
(SIEMAT)
राजस्थान, जयपुर

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP- 2020) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCF-SE 2023) ने शिक्षा के क्षितिज को और भी व्यापक बना दिया है। ये दस्तावेज सिर्फ किताबी ज्ञान और कौशल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये विद्यार्थियों के **चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों को विकसित करने और नेतृत्व क्षमता** को भी निखारने पर ज़ोर देते हैं।

इस विचार को साकार करने के लिए राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी ने सभी संस्था प्रधानों के लिए एक लीडरशिप मॉड्यूल तैयार किया है। यह मॉड्यूल विशेष रूप से राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों पर आधारित नेतृत्व क्षमता को विकसित करने के उद्देश्य से बनाया गया है।

राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी पहले भी संस्था प्रधानों के लिए नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहा है। लेकिन NEP-2020 और NCF-SE 2023 की नई अपेक्षाओं के अनुरूप एक ऐसा प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाना एक महत्वपूर्ण चुनौती थी, जो संस्था प्रधानों के माध्यम से विद्यार्थियों में चरित्र, मूल्य और नेतृत्व क्षमता का विकास कर सके। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी (SIEMAT) ने अपनी अनुभवी और दक्ष टीम के साथ मिलकर, विभागीय गतिविधियों और प्रशासनिक जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निभाने के लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण विषयों और सामग्री का सावधानीपूर्वक चयन किया। यह कार्य न केवल कुशलतापूर्वक पूर्ण किया गया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया गया कि मॉड्यूल आधुनिक शिक्षा की जरूरतों को पूर्ण करे।

इस प्रशिक्षण के बाद संस्था प्रधानों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण नेतृत्व कौशल, दक्षताएँ और क्षमताएँ विकसित होंगी:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP-2020) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCF-SE 2023) के आलोक में राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों पर आधारित सशक्त नेतृत्व क्षमता का विकास।
- मानवीय और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक सकारात्मक और समावेशी विद्यालयी परिवेश बनाने की गहरी समझ विकसित होगी।
- विद्यालयों को राष्ट्रीय नेतृत्व के विकास की संस्थान के रूप में विकसित करने में मदद मिलेगी ।
- शिक्षकों, विद्यार्थियों और समुदाय में राष्ट्रीय मूल्यों को स्थापित करने की क्षमता जिससे वे सभी एक बेहतर राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सकें।

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम न केवल राज्य भर के संस्था प्रधानों को सशक्त करेगा बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य को भी दिशा देगा। इस मॉड्यूल निर्माण में शामिल सभी विशेषज्ञों को बधाई व साधुवाद!

शुभकामनाओं के साथ,

निदेशक

ओम प्रकाश विजय
विभागाध्यक्ष
राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी
(SIEMAT)
राजस्थान, जयपुर

संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCF-SE 2023) हमारे देश की शिक्षा प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव की शुरुआत कर चुके हैं। ये सिर्फ दस्तावेज़ नहीं हैं बल्कि एक नई दृष्टि और एक नए लक्ष्य का प्रतीक है। इनका मूल उद्देश्य सिर्फ अकादमिक ज्ञान देना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को एक पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में ढालना है, जहाँ ज्ञान के साथ-साथ **नैतिक मूल्य, चरित्र निर्माण और नेतृत्व की क्षमता** का भी विकास हो।

इसी भावना को आत्मसात करते हुए **राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी** (राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान-SIEMAT) ने NIEPA (National Institute of Educational Planning and Administration) के सहयोग से एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए। शिक्षा विभाग के सभी संस्था प्रधानों के लिए एक अत्याधुनिक और दूरदर्शी लीडरशिप मॉड्यूल तैयार किया है। यह मॉड्यूल विशेष रूप से राष्ट्रीय चरित्र और भारतीय मूल्यों पर आधारित नेतृत्व गुणों को विकसित करने पर केंद्रित है ताकि हमारे संस्था प्रधान भविष्य के राष्ट्र निर्माताओं को सही दिशा दे सकें।

NEP-2020 और NCF-SE 2023 की अपेक्षाओं के अनुरूप एक ऐसा प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाना एक महत्वपूर्ण चुनौती थी, इस चुनौती को स्वीकार करते हुए SIEMAT ने अपनी अनुभवी और समर्पित टीम के अथक प्रयासों से मॉड्यूल का निर्माण किया है। मॉड्यूल निर्माण के समय विभिन्न विभागीय गतिविधियों, प्रशासनिक उत्तरदायित्वों और कुशल कार्य संपादन के लिए आवश्यक सभी विषयों का गहन विश्लेषण किया। इस प्रक्रिया के माध्यम से एक ऐसा प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किया है, जो न केवल सैद्धांतिक है बल्कि पूरी तरह से व्यावहारिक और प्रासंगिक है। यह मॉड्यूल संस्था प्रधानों को उनके कार्यक्षेत्र में आने वाली हर छोटी-बड़ी चुनौती का सामना करने के लिए तैयार करेगा। मॉड्यूल आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम को पूरा करने के बाद संस्था प्रधानों में नेतृत्व कौशल और दक्षताओं का विकास होगा:

- NEP-2020 और NCF-SE 2023 के अनुरूप राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों पर आधारित नेतृत्व: वे इन नीतियों की गहरी समझ विकसित करेंगे और उन्हें प्रभावी ढंग से अपने विद्यालयों में लागू कर पाएंगे।
- मानवीय, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित विद्यालयी परिवेश का निर्माण: वे ऐसे वातावरण का निर्माण करेंगे जहाँ हर विद्यार्थी को अपनी पहचान और गरिमा का अनुभव हो और विविधता का सम्मान किया जाए।
- शिक्षक, विद्यार्थी और समुदाय में राष्ट्रीय मूल्यों का संचार: वे एक ऐसे प्रेरणा स्रोत बनेंगे जो अपने शिक्षकों, विद्यार्थियों और पूरे समुदाय को राष्ट्र के प्रति उनके कर्तव्यों और जिम्मेदारियों के बारे में जागरूक कर सकें।

यह कार्यक्रम सिर्फ एक कौशल विकास तक सीमित नहीं है बल्कि एक राष्ट्रीय मिशन है जो हमारे संस्था प्रधानों को सशक्त करेगा ताकि वे एक ऐसे भारत का निर्माण कर सकें जहाँ हर नागरिक अपने मूल्यों और क्षमताओं के साथ राष्ट्र के विकास में योगदान दे सके।

शुभकामनाओं के साथ,

विभागाध्यक्ष

मुख्य संरक्षक

श्री मदन दिलावर

माननीय मंत्री, शिक्षा (विद्यालय एवं संस्कृत)

एवं पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार

संरक्षक

श्री कृष्ण कुणाल (IAS)

शासन सचिव, स्कूल शिक्षा, भाषा, पुस्तकालय विभाग एवं

पंचायती राज (प्रारम्भिक शिक्षा), राजस्थान सरकार, जयपुर

मार्गदर्शक

श्री मनीष गोयल (IAS)

निदेशक

राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी (सीमेट), जयपुर

परामर्शक

श्री ओम प्रकाश विजय

विभागाध्यक्ष

राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी (सीमेट), जयपुर

प्रभारी एवं समन्वयक

डॉ. रचना शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर

राजस्थान स्टेट लीडरशिप एकेडमी (सीमेट), जयपुर

अकादमिक व लेखन समूह

1. **श्री मोहित कुमार,** प्राचार्य, रा.उ.मा.वि दामोदरपुरा जयपुर।
2. **श्री राजेश कुमार मीना**, प्राचार्य, रा.उ.मा.वि रहरई धौलपुर।
3. **श्री दीपचन्द लाखवान**, प्राचार्य, पीएमश्री महात्मा गांधी शहीद कुलदीप सिंह राजकीय विद्यालय घरड़ाना खुर्द, झुंझुनूँ
4. **श्री योगेन्द्र प्रसाद शर्मा,** वरिष्ठ व्याख्याता, जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान गोनेर जयपुर।
5. **श्री मुकेश चंद,** उपप्राचार्य, रा.उ.मा.वि जाटौली थून, डीग।
6. **श्री पंकज कुमार,** अतिरिक्त मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, अनूपगढ़।
7. **श्री वीरेंद्र शर्मा,** संदर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन।
8. **श्री नरेंद्र सिंह,** संदर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन।
9. **श्री दशरथ पारीक,** संदर्भ व्यक्ति, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन।
10. **श्री मुहम्मद खुलूस खान,** सीनियर प्रोग्राम लीडर, पीरामल फाउंडेशन।

03 दिवसीय प्रशिक्षण समय सारणी

Days	First Session 09:30am to 10:00am	Second Session 10:00am to 11:30am	Tea Break 15 Minute	Third Session 11:45am to 01:15pm	Lunch Break 45 Minute	Fourth Session 02:00pm to 03:30pm	Tea Break 15 Minute	Evening Session 03:45pm to 05:15pm
Day-I	प्रार्थना एवं पंजीयन	परिचय उद्देश्य अपेक्षाएं		राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्य, नेतृत्व एवं राष्ट्रीय चरित्र		विद्यालय के संदर्भ में राष्ट्रीय मूल्य,राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय नेतृत्व की अवधारणा		वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्यों की आवश्यकता
Day-II	प्रार्थना एवं फीडबैक	शैक्षिक संदर्भ में संवैधानिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की समझ		राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित विद्यालय संस्कृति (NEP 2020 के संदर्भ में)		राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना में संस्था प्रधानों की भूमिका		विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्य एवं चरित्र निर्माण: हितधारकों के साथ समन्वय
Day-III	प्रार्थना एवं फीडबैक	विद्यालय के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र के विकास में चुनौतियाँ		विद्यालय में बेहतर कार्य संस्कृति की स्थापना हेतु कार्यान्वयन रणनीति		विद्यालय रूपान्तरण		फीडबैक एवं समापन

नोट:- सत्र की समयावधि में आवश्यकता अनुसार आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
	पंजीयन	
सत्र-1	परिचय, उद्देश्य एवं अपेक्षाएं	**5**
सत्र-2	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्य, नेतृत्व एवं राष्ट्रीय चरित्र	**8**
सत्र-3	विद्यालय के संदर्भ में राष्ट्रीय मूल्य,राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय नेतृत्व की अवधारणा	**14**
सत्र-4	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्यों की आवश्यकता	**18**
सत्र-5	शैक्षिक संदर्भ में संवैधानिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की समझ	**23**
सत्र-6	राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित विद्यालय संस्कृति (NEP 2020 के संदर्भ में)	**28**
सत्र-7	राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना में संस्था प्रधानों की भूमिका	**34**
सत्र-8	विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्य एवं चरित्र निर्माण: हितधारकों के साथ समन्वय	**38**
सत्र-9	विद्यालय के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र के विकास में चुनौतियाँ	**45**
सत्र-10	विद्यालय में बेहतर कार्य संस्कृति की स्थापना हेतु कार्यान्वयन रणनीति	**52**
सत्र-11	विद्यालय रूपान्तरण	**57**
सत्र-12	खुला सत्र - जिज्ञासाएँ, फीडबैक एवं समापन	

सत्र-1 : परिचय, उद्देश्य एवं अपेक्षाएं

समय : 90 मिनट

अवधारणा

किसी भी प्रशिक्षण की शुरुआत केवल औपचारिक परिचय भर नहीं होती, बल्कि यह उस साझा सीखने की यात्रा की नींव रखती है जिसमें संभागी स्वयं को एक-दूसरे से और प्रशिक्षण के उद्देश्य से जोड़ते हैं। "राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्य" जैसे गहन विषय पर सार्थक संवाद तभी संभव है जब सभी संभागी शुरुआत से ही अपनी पहचान, अनुभव और अपेक्षाएँ साझा करें और यह महसूस करें कि वे केवल श्रोता नहीं बल्कि इस प्रक्रिया के सक्रिय सह-निर्माता (co-creators) हैं। इस सत्र के माध्यम से संभागियों के बीच विश्वास, सहभागिता और साझा दृष्टि का निर्माण होता है, जिससे आगे के सभी सत्रों के लिए एक सकारात्मक, प्रेरक और सहयोगी वातावरण तैयार होता है।

उद्देश्य

1. सभी संभागियों के बीच आपसी परिचय और संवाद का माहौल विकसित करना।
2. प्रशिक्षण की पृष्ठभूमि, विजन और उद्देश्य को स्पष्ट करना।
3. संभागियों की व्यक्तिगत एवं संस्थागत अपेक्षाओं को समझना।
4. प्रशिक्षण के उद्देश्यों और अपेक्षाओं को जोड़कर एक साझा समझ विकसित करना।

आवश्यक सामग्री: चार्ट पेपर / फ्लिपचार्ट / पिनबोर्ड**,** मार्कर पेन (विभिन्न रंगों में)**,** स्टिकर नोट्स (प्रत्येक संभागी को 2–3)**,** प्रोजेक्टर और स्क्रीन, टेप / पिन्स व Reflection Sheet (छोटा फ़ॉर्मेट – "मेरी अपेक्षाएँ – मेरा योगदान")

गतिविधि - स्वागत एवं परिचय

चरण 1:

- संदर्भ व्यक्ति संभागियों का स्वागत करें और हल्के अंदाज़ में "आप सभी का इस विशेष यात्रा में स्वागत है, जहाँ हम मिलकर राष्ट्रीय नेतृत्व और राष्ट्रीय मूल्यों को विद्यालयों में सशक्त बनाने की दिशा में चर्चा करेंगे/ सोचेंगे।"
- एक छोटी **Energizer Activity (उर्जात्मक प्रेरक गतिविधि)** करवाई जाए – जैसे कि "खड़े होकर अपने दाएँ हाथ से एक गोला और बाएँ हाथ से एक सीधी रेखा बनाने की कोशिश करें" – ताकि संभागियों का ध्यान और ऊर्जा दोनों सक्रिय हो जाएँ।

चरण 2: "मेरा नाम, मेरा मूल्य"

- प्रत्येक संभागी अपना नाम, विद्यालय का नाम और एक ऐसा मूल्य साझा करेगा जिसे वे विद्यालय के विद्यार्थियों में सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं (जैसे– ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन, सेवा भावना, सहिष्णुता)।
- संदर्भ व्यक्ति सभी मूल्यों को फ्लिपचार्ट पर लिखते जाएँ।
- अंत में संभागियों से चर्चा करें – "क्या आपको लगता है कि ये मूल्य केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे राष्ट्रीय चरित्र की नींव भी हैं?"

चरण 3: प्रशिक्षण उद्देश्य साझा करना

- प्रोजेक्टर/चार्ट पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का शेड्यूल और उद्देश्य प्रस्तुत करें।
- स्पष्ट करें कि यह प्रशिक्षण केवल ज्ञान देने का प्रयास नहीं है, बल्कि अनुभव आधारित सहभागिता पर आधारित है।
- उदाहरण देकर बताएं: "यहाँ हम आपसे व्याख्यान के रूप में नहीं, बल्कि आपके अनुभवों और विचारों से सीखने आए हैं। यह यात्रा हम सब मिलकर करेंगे।

चरण 4: हमारी सामूहिक अपेक्षाएँ – "दीवार पर सपने"

- प्रत्येक संभागी को 2–3 स्टिकर नोट दिए जाएँ।
- उनसे लिखवाएँ कि वे इस प्रशिक्षण से क्या पाना चाहते हैं (व्यक्तिगत और संस्थागत दोनों स्तर पर)।
- सभी नोट्स को चार्ट पेपर/बोर्ड पर चिपकाएँ और इसे नाम दें –**"हमारी सामूहिक अपेक्षाएँ"**।
- संदर्भ व्यक्ति इन अपेक्षाओं को ज़ोर से पढ़ें और पूछें – "क्या इनमें से कोई अपेक्षा ऐसी है जिसे आप सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं?"
- चर्चा के माध्यम से 3–4 प्रमुख अपेक्षाओं को चुनकर घेरा लगाएँ और उन्हें प्रशिक्षण के आधिकारिक उद्देश्यों से जोड़ें।

चरण 5: प्रशिक्षण के नियम तय करना

- संदर्भ व्यक्ति संभागियों से मिलकर प्रशिक्षण के लिए कुछ सामूहिक नियम (Ground Rules) तय करें। उदाहरण-
    1. समय का पालन करना।
    2. सभी की राय का सम्मान करना।
    3. मोबाइल का उपयोग केवल आवश्यक स्थिति में करना।
    4. सक्रिय भागीदारी और खुले मन से विचार साझा करना।
    5. गोपनीयता का पालन – समूह चर्चा की बातें बाहर साझा न करना।
- इन नियमों को चार्ट पेपर पर लिखकर दीवार पर चिपका दिया जाए ताकि तीनों दिनों तक याद रहे।

चरण 6: सत्रों की जानकारी और समय रेखा साझा करना

- सन्दर्भ व्यक्ति पूरे तीन दिवसीय प्रशिक्षण की रूपरेखा/flow समझाएँ और बताएं कि हर दिन किन मुख्य विषयों पर चर्चा होगी।
- **Day-1**: परिचय, अवधारणा और NEP संदर्भ
- **Day-2**: मूल्य, विद्यालय संस्कृति और नेतृत्व की भूमिका
- **Day-3**: चुनौतियाँ, रणनीतियाँ और अपेक्षित बदलाव
- एक **समय सारणी** दिखाएँ जिसमें प्रत्येक दिन के 3–4 सत्रों का क्रम और समय उल्लेखित हो।

- संभागियों से आग्रह करें कि वे हर दिन सक्रिय रूप से इस समयरेखा के अनुसार भागीदारी करें।

पठन सामग्री / परिशिष्ट

- प्रशिक्षण बुकलेट (परिचय पृष्ठ)
- NEP 2020 से लिए गए चयनित अंश (चरित्र निर्माण, नेतृत्व और मूल्य शिक्षा से संबंधित)
- Reflection Sheet – "मेरी अपेक्षाएँ – मेरा योगदान"

समेकन

- संदर्भ व्यक्ति अपेक्षाओं का सारांश प्रस्तुत करें और कहें कि –
  "आपकी अपेक्षाएँ और हमारा उद्देश्य एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। यह प्रशिक्षण आप सबकी भागीदारी से ही सफल होगा।"
- यह स्पष्ट करें कि संभागी केवल श्रोता नहीं बल्कि सह-निर्माता हैं।
- समेकन एक प्रेरक पंक्ति से करें:
  "राष्ट्रीय नेतृत्व और चरित्र निर्माण एक ऐसी संकल्पना है जो हमारी आन्तरिक अभिप्रेरणा में निहित है, हमें केवल इसे जागृत करना है।"

सत्र : 2 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्य, नेतृत्व एवं राष्ट्रीय चरित्र

समय - 90 मिनट

अवधारणा:

भारतीय शिक्षा के विचार, मूल्यों एवं समृद्ध परंपरा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। ज्ञान, प्रज्ञा और सत्य की खोज को भारतीय विचार परंपरा और दर्शन में सदा सर्वोच्च लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। सतत् विकास एजेंडा के लक्ष्य चार में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास योजना Quality Education के अनुसार विश्व में सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यंत शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिए जाने का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार 2040 तक भारत में एक ऐसी शिक्षा प्रणाली होगी जो मानवीय मूल्य से पोषित वैश्विक नागरिकों को तैयार करेगी और ऐसी शिक्षा व्यवस्था होगी जिसमें बिना किसी भेदभाव के सभी की भागीदारी सुनिश्चित होगी। यह 21वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है तथा देश की विविधता एवं संवैधानिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए, 21वीं सदी की शिक्षा के लिए अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 और राष्ट्रीय मूल्यों के बीच गहरा संबंध है। इस नीति का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, समावेशी और कौशल आधारित बनाना है, साथ ही भारतीय मूल्यों और परंपराओं को भी संरक्षित करना है। NEP 2020 और NCF-SE 2023 में राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्य की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है। NEP 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव लाने की दिशा में काम कर रही है, जो विद्यार्थियों को समग्र रूप से विकसित करने और उन्हें भविष्य के लिए तैयार करने में मदद करेगी

इस दस्तावेजों में "राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्य" को वास्तविकता में लाने के लिए कुछ विशेष अपेक्षाएँ की गई हैं जिन्हें संस्था प्रधानों के लिए समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

उद्देश्य-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र के विकास की अवधारणा एवं अपेक्षाओं को समझ सकेंगे |
2. स्कूली प्रक्रियाओं के संदर्भ में समानता और समावेशिता के महत्व को समझ सकेंगे।
3. वैश्विक नागरिक निर्माण हेतु शिक्षा नीति की महती भूमिका को समझ सकेंगे।

आवश्यक सामग्री - कार्ड सीट, मार्कर, पेपर, NEP मार्गदर्शक सिद्धांत, उद्देश्य का आलेख

गतिविधि 1.1 NEP 2020 के मार्गदर्शक सिद्धांत की समझ (4 समूह में कार्य करना है)

- NEP 2020 के प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धांत कौन कौन से है?
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति में राष्ट्रीय मूल्य,चरित्र के सन्दर्भ में कौन कौन से तथ्यों को उल्लेखित किया गया है ?

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांत

(Guiding Principles of National Education Policy 2020)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारत की शिक्षा प्रणाली को समावेशी, लचीला और 21वीं सदी की जरूरतों के अनुकूल बनाने के उद्देश्य से तैयार की गई है। इस नीति के सिद्धांत शिक्षा के हर स्तर पर व्यापक सुधार और नवाचार को सुनिश्चित करते हैं।

- हर विद्यार्थी को विशिष्ट क्षमताओं की पहचान और उसके विकास हेतु प्रयास करना।
- बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना – निपुण भारत अभियान के तहत कक्षा 3 तक या 8 वर्ष तक साक्षरता में संख्या ज्ञान को प्राथमिकता देना।
- **लचीलापन** – विद्यार्थियों को रुचि में योग्यताओं के अनुसार विषय चुनने की स्वतंत्रता हो।
- **सम्बद्धता** – बहुआयामी ज्ञान की एकता में अखंडता सुनिश्चित करने के लिए सभी विषयों को जोड़कर पढ़ाना।
- **अवधारणात्मक समझ कर जोर देना** – रटने व केवल परीक्षा पर बल देने का विरोध करता है, समझ विकसित करने की अभिशंसा की गई है।
- **रचनात्मक व तार्किक सोच** – तार्किक निर्णय लेने व नवाचारों पर बल देना।
- **नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों पर बल देना।**
- **बहुभाषिकता** – प्रारंभिक शिक्षा मातृ भाषा में देते हुए बहुभाषिकता पर बल देना।
- जीवन कौशल पर बल देना।
- सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर देना।
- तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर जोर देना।
- अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन कुशलता, ऑडिट के लिए हल्का लेकिन प्रभावी नियामक ढांचा बनाना।
- निरंतर व नियमित परिवर्तन के लिए अनुसंधान पर बल देना।
- भारतीय संस्कृति और गौरव से जुड़े रहने पर बल देना।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्य

(Objectives of National Education Policy 2020)

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का उद्देश्य भारतीय शिक्षा प्रणाली को आधुनिक, समावेशी और कौशल आधारित बनाकर 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करना है। इस नीति का लक्ष्य विद्यार्थियों को उनकी क्षमताओं और रुचियों के अनुसार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

मुख्य उद्देश्य:

1. **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना:**
   - शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ावा देना और हर स्तर पर सुलभ बनाना।
   - आधुनिक तकनीकी और नवाचार का उपयोग कर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को बेहतर बनाना।
2. **शिक्षा में समानता और समावेशिता:**
   - समाज के वंचित और कमजोर वर्गों (SC, ST, OBC, दिव्यांग और महिलाओं) के लिए शिक्षा को सुलभ बनाना।
   - ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा के अंतर को पाटना।
3. **समग्र और बहुआयामी विकास:**

- विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक विकास के लिए समग्र शिक्षा प्रणाली लागू करना।
- पाठ्यक्रम में सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे कला, खेल और संगीत को शामिल करना।

4. 21वीं सदी के कौशल विकसित करना:

- रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना।
- विद्यार्थियों को रोजगार योग्य और आत्मनिर्भर बनाने के लिए कौशल आधारित शिक्षा प्रदान करना।

5. भारतीय संस्कृति और मूल्यों का संरक्षण:

- शिक्षा में भारतीय परंपराओं, संस्कृति और नैतिक मूल्यों का समावेश।
- मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता देकर भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना।

6. शिक्षा का वैश्वीकरण:

- भारतीय शिक्षा प्रणाली को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना।
- भारत को शिक्षा और ज्ञान का वैश्विक केंद्र बनाना।

7. अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना:

- शोध और विकास के लिए "राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (NRF) की स्थापना।
- विद्यार्थियों और शिक्षकों को अनुसंधान में भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

8. शिक्षा में लचीलापन लाना:

- मल्टीपल एंट्री और एग्जिट प्रणाली लागू करना।
- विद्यार्थियों को उनके पसंदीदा विषयों और क्षेत्रों में पढ़ाई करने की स्वतंत्रता।

9. डिजिटल और तकनीकी शिक्षा को प्रोत्साहन:

- तकनीकी और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना।
- ई-लर्निंग को बढ़ावा देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल संसाधन उपलब्ध कराना।

10. शिक्षक प्रशिक्षण और विकास:

- शिक्षकों की गुणवत्ता और प्रशिक्षण में सुधार।
- शिक्षकों के पेशेवर विकास के लिए सुविधाएं प्रदान करना।

11. व्यावसायिक शिक्षा का प्रचार:

- कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रम शुरू करना।
- वर्ष 2025 तक 50% विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य।

गतिविधि 1.2

- NEP 2020 के मार्गदर्शक सिद्धांत के विद्यालय स्तर पर विकास के लिए क्या गतिविधियां हो सकती है?

(समूह 1-2 के लिए)

- शिक्षा के माध्यम से विधालय में राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र का किस प्रकार विकास किया जा सकता है, के लिए कार्य योजना बनाए| (समूह 3-4 के लिए)

गतिविधि 1.3 समूह चर्चा

- राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र के विकास हेतु संस्था प्रधानों से क्या अपेक्षा है?
- राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र के विकास हेतु शिक्षकों से क्या अपेक्षा है ?
- शिक्षकों द्वारा मूल्य आधारित शिक्षा किस प्रकार प्रदान की जाए,चर्चा करें |
- राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र के विकास हेतु अभिभावकों से किस प्रकार के सहयोग की अपेक्षा है ?

1. संस्था प्रधान (Principal/Head) से अपेक्षाएँ

- **विज़न और नेतृत्व**: विद्यालय को केवल पढ़ाई का स्थान न मानकर, चरित्र निर्माण और मूल्यों का केंद्र बनाना।
- **स्वस्थ विद्यालय संस्कृति** (School Culture) विकसित करना जहाँ समानता, सम्मान, सहयोग और सेवा-भाव वातावरण का हिस्सा हों
- **शिक्षकों को सक्षम बनाना**: उन्हें स्वायत्तता, सहयोग और प्रेरणा देना ताकि वे विद्यार्थियों में नैतिक और संवैधानिक मूल्यों को समाविष्ट कर सकें।
- **समुदाय और अभिभावकों की भागीदारी** सुनिश्चित करना, जिससे विद्यालय समाज के मूल्यों से जुड़ा रहे और विद्यार्थी उदाहरण से सीखें।
- **आदर्श प्रस्तुत करना** (Role Model): ईमानदारी, पारदर्शिता, करुणा और न्यायप्रियता के व्यक्तिगत आचरण से विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए प्रेरणा बनना।

2. शिक्षकों से अपेक्षाएँ

- **मूल्य-आधारित शिक्षा:** केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि करुणा, सत्यनिष्ठा, सहयोग, जिम्मेदारी और संवैधानिक मूल्यों को गतिविधियों, चर्चाओं और व्यवहार के माध्यम से सिखाना।
- **कक्षा में आचरण**: विद्यार्थियों के साथ समानता और सम्मानपूर्ण व्यवहार करना (जाति, लिंग, धर्म, पृष्ठभूमि से परे)।
- **जीवंत शिक्षण**: कहानियों, चर्चाओं, प्रोजेक्ट्स, गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को सही-गलत पर सोचने और निर्णय लेने की क्षमता विकसित कराना।
- **रोल मॉडल बनना**: अपने आचरण में सत्यनिष्ठा, समयनिष्ठा, सेवा-भाव और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण दिखाना।
- **सतत चिंतन और सीखना**: समय-समय पर आत्ममूल्यांकन करना कि विद्यार्थियों में कौन-से मूल्य विकसित हो रहे हैं और किन पर और काम करना है।
- **विद्यालय की सामूहिक जिम्मेदारी**: यह मानना कि प्रत्येक शिक्षक, चाहे किसी भी विषय का हो, राष्ट्रीय चरित्र और भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।

समेकन:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2023 (NCF-SE 2023) इस बात पर बल देते हैं कि शिक्षा केवल ज्ञान और कौशल तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, मूल्य संवर्धन और नेतृत्व क्षमता को भी विकसित करे। सन्दर्भ व्यक्ति निम्नानुसार बिन्दुओं को उभारते हुए समेकन करें।

1. **राष्ट्रीय मूल्य (National Values):**

- NEP 2020 में नैतिकता और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों में सहानुभूति, साहस और रचनात्मकता जैसे गुण विकसित हों| विद्यार्थी नैतिक, दार्शनिक और संवैधानिक मूल्यों (जैसे न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व) को आत्मसात करें।
- शिक्षा विद्यार्थियों में सेवा (Seva), अहिंसा (Ahinsa), सत्य (Satya), निष्काम कर्म (Nishkama karma), स्वच्छता, समानता, न्याय, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, करुणा, सहिष्णुता, जिम्मेदारी जैसे मूल्यों का विकास करे
- शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास नहीं, बल्कि *सत्यनिष्ठा, सहयोग, संवैधानिक मूल्यों, सेवा-भाव, करुणा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण* को आत्मसात कराना है। इन मूल्यों पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों को *संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक* बनाती है।

2. **राष्ट्रीय चरित्र निर्माण (National Character):**

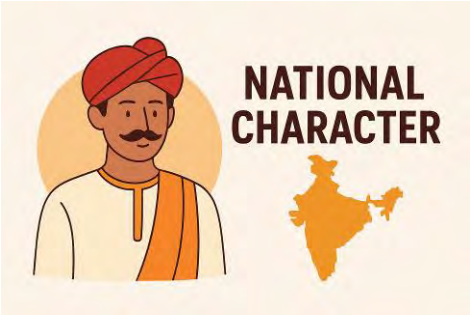

- राष्ट्रीय चरित्र का आशय है कि विद्यार्थी भारतीय परंपरा और संविधान से निकले मूल्यों के आधार पर जिम्मेदार, ईमानदार, लोकतांत्रिक और सेवाभावी नागरिक बनें
- शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक विकास (cognitive development) नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास है|
- चरित्र निर्माण के बिना ज्ञान अधूरा है। मजबूत चरित्र वही है जिसमें *नैतिकता, अनुशासन, पारदर्शिता और जिम्मेदारी* हो। चरित्रवान विद्यार्थी ही समाज में सही निर्णय लेने और न्यायपूर्ण व्यवहार करने में सक्षम होते हैं।

3. **राष्ट्रीय नेतृत्व (National Leadership):**

- राष्ट्रीय नेतृत्व का आशय है कि शिक्षा ऐसी पीढ़ी तैयार करे जो भारत को वैश्विक स्तर पर ज्ञान, विज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में नेतृत्व दिला सके |
- शिक्षा व्यवस्था से ऐसे रचनात्मक, संवेदनशील और जिम्मेदार नेतृत्व की अपेक्षा है जो लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के साथ समाज और राष्ट्र को आगे बढ़ाए |
- NEP 2020 विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गर्व और संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देती है, जिससे वे देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें।

- विद्यार्थियों को बचपन से ही "सही कार्य करना" सिखाया जाए और बड़े होने पर वे नैतिक निर्णय लेने और बहस करने की क्षमता विकसित करें|
- सच्चा नेतृत्व केवल पद या अधिकार से नहीं आता, बल्कि *दृष्टि, सेवा-भाव और जिम्मेदार आचरण* से निर्मित होता है। नेतृत्व का आधार सदैव *मजबूत चरित्र और उच्च मूल्य* होना चाहिए।

4. संयोजन (Integration) एवं साझा जिम्मेदारी (Collective Responsibility)

- राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र और मूल्य परस्पर जुड़े हुए हैं। शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों में मूल्य और चरित्र का विकास करती है, तो वे अपने जीवन में आगे चलकर राष्ट्रीय और वैश्विक नेतृत्व निभाने में सक्षम होंगे।
- विद्यालय केवल पढ़ाई का स्थान न होकर *मूल्यों और नेतृत्व कौशलों के विकास की प्रयोगशाला* बनता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे वे शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक रूप से विकसित हो सकें।
- NEP 2020 और NCF 2023 के आधार पर "राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्य" को वास्तविकता में लाने के लिए प्रभावी नेतृत्व के साथ संस्था प्रधान (Principal/Head), शिक्षक एवं समाज को मिलकर काम करने की अपेक्षा है। यह कार्य केवल विद्यालय तक सीमित नहीं बल्कि सामूहिक प्रयास से ही संभव है।

सत्र : 3 विद्यालय के संदर्भ में राष्ट्रीय मूल्य,राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय नेतृत्व की अवधारणा

समय : 90 मिनट

अवधारणा :

भारतीय अवधारणा के अनुसार, राष्ट्रीय मूल्य और चरित्र नागरिकों के साझा विश्वासों, व्यवहार के मानदंडों और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित होते हैं, जिनका पालन करके राष्ट्र की प्रगति, एकता और शक्ति सुनिश्चित होती है। इन मूल्यों को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत राष्ट्रीय नेतृत्व की आवश्यकता होती है, जो न केवल व्यक्तिगत ईमानदारी और नैतिक मूल्यों को अपनाए, बल्कि अनुयायियों में भी इन गुणों का विकास कर सके, ताकि वे राष्ट्र के प्रति कर्तव्यनिष्ठ और निष्ठावान बन सकें।

लोकतान्त्रिक समाज में किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में यह गुण जन्मजात नहीं होते है, इनका विकास क्रमिक रूप से होता है एवम इस क्रमिक विकास का सबसे प्रमुख स्रोत यदि शिक्षा को माना जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि एक बालक के एक जिम्मेदार नागरिक बनने की सम्पूर्ण यात्रा में उसके शैक्षिक परिवेश की महती भूमिका रहती है। अतः शैक्षिक परिवेश में राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय नेतृत्व को विकसित किये जाने हेतु समेकित प्रयास किये जाने अपेक्षित है|

राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय नेतृत्व : अर्थ

1. **राष्ट्रीय मूल्य** – समानता, न्याय, स्वतंत्रता, बंधुत्व और बहुलवाद, सत्य, अहिंसा, शांति, प्रेम,दया, करुणा,समानुभूति, अनुशासन, सहिष्णुता, सेवा भाव, समग्र विकास, समावेशिता, समानता, बहुभाषावाद, आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, दूसरों के प्रति सम्मान, स्वच्छता और सार्वजनिक संपत्ति के प्रति सम्मान
2. **राष्ट्रीय चरित्र** – अनुशासन, समयपालन, ईमानदारी, जिम्मेदारी, देशभक्ति, विविधता में एकता।
3. **राष्ट्रीय नेतृत्व** – राष्ट्रीय नेतृत्व वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति या संस्था राष्ट्र के समग्र विकास के लिए लोगों को प्रेरित, मार्गदर्शित और संगठित करती है। इसमें केवल व्यक्तिगत हित नहीं बल्कि राष्ट्रहित सर्वोपरि माना जाता है। राष्ट्रीय नेतृत्व का उद्देश्य नागरिकों में जागरूकता, जिम्मेदारी, एकता और राष्ट्रभक्ति की भावना जगाकर देश को प्रगति और समृद्धि की ओर ले जाना है।

उद्देश्य:

1. राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय मूल्य एवं राष्ट्रीय चरित्र की अवधारणा की समझ विकसित करना।
2. राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय मूल्य एवं राष्ट्रीय चरित्र की अवधारणा के परस्पर अन्तर्सम्बन्ध की समझ विकसित करना।
3. विद्यार्थियों में राष्ट्रीय मूल्य,राष्ट्रीय चरित्र की भावना एवं नेतृत्व क्षमता का विकास करने में विद्यालय परिवेश की भूमिका की समझ को विकसित करना।

आवश्यक सामग्री: PPT प्रेज़ेंटेशन, फ्लिपचार्ट/व्हाइटबोर्ड, मार्कर, केस स्टडी प्रिंटआउट, चार्ट पेपर, स्केच पेन, प्रोजेकटर

गतिविधि-1

चरण 1 – भूमिका (Introduction)

- स्वागत एवं आइस-ब्रेकिंग (Ice Breaking Activity):
  प्रश्न: "यदि आप अपने विद्यालय के विद्यार्थियों में एक गुण सबसे पहले विकसित करना चाहें तो वह कौन-सा होगा और क्यों?

संभागी जो उत्तर देवें सत्र संचालक उन्हें बोर्ड पर क्रमबद्ध रूप से लिखें और चर्चा करे

चरण 2 – अवधारणाओं की प्रस्तुति (Conceptual Understanding)

विद्यालय के संदर्भ में राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व की अवधारणा निम्नलिखित है:

राष्ट्रीय मूल्य :

विद्यालय में राष्ट्रीय मूल्यों को बढ़ावा देने से विद्यार्थियों में निम्नलिखित गुणों का विकास हो सकता है:

1. **समानता**: विद्यार्थियों को समानता के महत्व के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति संवेदनशील बनाना।
2. **न्याय**: विद्यार्थियों को न्याय के महत्व के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति जागरूक बनाना।
3. **स्वतंत्रता**: विद्यार्थियों को स्वतंत्रता के महत्व के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति जिम्मेदार बनाना।
4. **एकता:** विद्यार्थियों को एकता के महत्व के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति संवेदनशील बनाना।

राष्ट्रीय चरित्र :

विद्यालय में राष्ट्रीय चरित्र को बढ़ावा देने से विद्यार्थियों में निम्नलिखित गुणों का विकास हो सकता है:

1. **देशभक्ति:** विद्यार्थियों में देशभक्ति की भावना को बढ़ावा देना।
2. **नैतिकता:** विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति जिम्मेदार बनाना।
3. **सामाजिक जिम्मेदारी:** विद्यार्थियों को सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति संवेदनशील बनाना।
4. **नेतृत्व क्षमता:** विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता को विकसित करना और उन्हें इसके प्रति प्रोत्साहित करना।

राष्ट्रीय नेतृत्व

विद्यालय में राष्ट्रीय नेतृत्व को बढ़ावा देने से विद्यार्थियों में निम्नलिखित गुणों का विकास हो सकता है:

1. **नेतृत्व क्षमता:** विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता को विकसित करना और उन्हें इसके प्रति प्रोत्साहित करना।
2. **निर्णय लेने की क्षमता:** विद्यार्थियों को निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करना और उन्हें इसके प्रति जिम्मेदार बनाना।
3. **संचार कौशल:** विद्यार्थियों को संचार कौशल के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति प्रोत्साहित करना।
4. **समस्या समाधान**: विद्यार्थियों को समस्या समाधान के बारे में सिखाना और उन्हें इसके प्रति प्रोत्साहित करना।

इन अवधारणाओं का महत्व

1. **विद्यार्थियों का विकास:** राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व विद्यार्थियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. **विद्यालय की भूमिका:** विद्यालय राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. **समाज के लिए तैयारी:** राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व विद्यार्थियों को समाज के लिए तैयार करने में मदद करते हैं।

इन अवधारणाओं के माध्यम से, विद्यालय विद्यार्थियों को राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व के महत्व के बारे में सिखा सकता है और उन्हें समाज के लिए तैयार कर सकता है।

समूह गतिविधि (Group Activity)

- संभागियों को 3 समूहों में बाँटा जाए:
  - ✓ राष्ट्रीय नेतृत्व
  - ✓ राष्ट्रीय मूल्य
  - ✓ राष्ट्रीय चरित्र
- कार्य: प्रत्येक समूह अपने विषय पर चर्चा कर यह बताए कि
  - ✓ विद्यालय में यह कैसे विकसित किया जा सकता है?
  - ✓ इसके लिए कौन-सी रणनीतियाँ/कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं?
- पोस्टर चार्ट या PPT पर प्रस्तुत करें।

केस स्टडी और भूमिका निर्वाह (Case Study & Role Play)

एक केस स्टडी दी जाए: "विद्यालय में विद्यार्थियों में अनुशासन की कमी है और राष्ट्रीय पर्वों में रुचि घट रही है। आप संस्था प्रधान के रूप में इसे कैसे सुधारेंगे?"

- समूह मिलकर समाधान प्रस्तुत करें।
- 1–2 समूह भूमिका निर्वाह (Role Play) के रूप में समाधान दिखाएँ
- रणनीति निर्माण (Strategy Building) [15 मिनट]

प्रत्येक संभागी से अपेक्षा:

- अपने विद्यालय में राष्ट्रीय नेतृत्व, मूल्य और चरित्र के विकास हेतु 3 ठोस कदम लिखें।
- इसे "Action Plan" के रूप में साझा करें।

समेकन एवं प्रतिबद्धता (Conclusion & Commitment)

- मुख्य बिंदुओं का पुनरावलोकन।
- **"प्रतिबद्धता शपथ"** – मैं अपने विद्यालय को राष्ट्रीय नेतृत्व, मूल्यों और चरित्र के विकास का केन्द्र बनाने का संकल्प लेता/लेती हूँ।
- धन्यवाद एवं प्रश्नोत्तर।

कहानी : हिरोशिमा के विद्यालय की शपथ :

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान की स्थिति बेहद दयनीय थी। हिरोशिमा पूरी तरह बर्बाद हो चुका था और होंकावा एलीमेंटरी स्कूल केवल खंडहर के रूप में बचा था। लेकिन इसी टूटी हुई इमारत के बीच शिक्षक और विद्यार्थियों ने शिक्षा और राष्ट्रप्रेम का दीपक जलाया। उन्होंने निर्णय लिया कि जापान को पुनः खड़ा करना है तो ज्ञान, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी को प्राथमिकता देनी होगी।

विद्यार्थी स्कूल के अवशेषों के बीच बैठकर पढ़ाई करने लगे। हर सुबह वे जापान का राष्ट्रीय ध्वज फहराते और यह शपथ लेते कि वे अपने राष्ट्र को जीवित करेंगे और शांति व प्रगति के मार्ग पर बढ़ेंगे। धीरे-धीरे यह विद्यालय आसपास के पूरे समुदाय के लिए प्रेरणा बन गया।

जो विद्यार्थी वहाँ पढ़ते थे, वे आगे चलकर जापान के पुनर्निर्माण में विभिन्न क्षेत्रों जैसे विज्ञान, उद्योग और शिक्षा में बड़ा योगदान देने वाले बने। होंकावा एलीमेंटरी स्कूल न केवल शिक्षा का केंद्र बना, बल्कि यह प्रतीक भी बन गया कि कठिनतम परिस्थितियों में भी सामूहिक संकल्प और शिक्षा से नई शुरुआत की जा सकती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जापान की स्थिति बेहद दयनीय थी। हिरोशिमा पूरी तरह बर्बाद हो चुका था और होंकावा एलीमेंटरी स्कूल केवल खंडहर के रूप में बचा था। लेकिन इसी टूटी हुई इमारत के बीच शिक्षक और विद्यार्थियों ने शिक्षा और राष्ट्रप्रेम का दीपक जलाया। उन्होंने निर्णय लिया कि जापान को पुनः खड़ा करना है तो ज्ञान, अनुशासन और राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी को प्राथमिकता देनी होगी।

कहानी सुनाने के पश्चात संदर्भ व्यक्ति निम्न साझा करें।

- विद्यालय केवल पढ़ाई की जगह नहीं, बल्कि राष्ट्रभक्ति और जिम्मेदारी की भावना जगाने का केन्द्र है।
- विद्यार्थियों ने यह साबित किया कि कठिन परिस्थितियों में भी राष्ट्र के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी उन्हें पुनर्निर्माण के मार्ग पर ले जा सकती है।
- यह कहानी बताती है कि राष्ट्रभक्ति केवल युद्ध या परेड में नहीं, बल्कि दैनिक अनुशासन, शिक्षा और सेवा में भी दिखाई देती है।

सत्र : 4 वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्यों की आवश्यकता

समय:90 मिनट

अवधारणा:

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र और मूल्यों की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि ये तत्व एक मजबूत, स्थिर और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करते हैं। आज के जटिल वैश्विक परिदृश्य में, प्रभावी नेतृत्व ही राष्ट्र को आंतरिक और बाहरी चुनौतियों से निपटने, एकता बनाए रखने और विकास को गति देने में सक्षम बनाता है। राष्ट्रीय चरित्र और मूल्य नैतिक आधार प्रदान करते हैं, जो समाज को ईमानदारी, सहिष्णुता और न्याय की ओर ले जाते हैं, जबकि राष्ट्रीय चरित्र यह सुनिश्चित करता है कि राष्ट्र का कामकाज इन्हीं मूल्यों पर आधारित हो। यह अवधारणा बताती है कि कैसे एक मजबूत नेतृत्व, सुदृढ़ राष्ट्रीय चरित्र और सकारात्मक मानवीय मूल्यों का सामंजस्य राष्ट्र को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से समृद्ध बना सकता है। इसलिए NEP 2020 में राष्ट्रीय चरित्र व मूल्यों का समावेश अनिवार्य माना गया है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में **राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्यों की आवश्यकता** को तीन स्तरों पर समझा जा सकता है—**व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय स्तर** पर।

उद्देश्य:

1. वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नेतृत्व की बदलती भूमिका को समझ सकेंगे।
2. राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों की पुनर्परिभाषा और उसकी शिक्षा संस्थानों में प्रासंगिकता की समझ विकसित कर सकेंगे।
3. संभागी को राष्ट्रीय नेतृत्व की अवधारणा को समझ सकेंगे।
4. राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्यों के महत्व को स्पष्ट कर सकेंगे।
5. वर्तमान चुनौतियों के संदर्भ में नेतृत्व एवं मूल्य-आधारित दृष्टिकोण पर समझ विकसित कर सकेंगे।
6. संभागियों में सकारात्मक नेतृत्व, नैतिकता व जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री : पीपीटी, प्रोजेक्टर, व्हाइट बोर्ड, मार्कर, इंटरनेट, चार्ट, स्केल, कलर आदि।

गतिविधि

चरण-1 शब्द–माला

- प्रश्न- नेतृत्व से क्या अभिप्राय है इसके प्रमुख गुण कौन कौन से है? प्रत्येक संभागी 1-1 गुण लिखें।
- संदर्भ व्यक्ति प्रत्येक संभागी को एक पर्ची दें, उस पर लिखें "नेतृत्व का एक गुण" (जैसे ईमानदारी, साहस, निष्ठा)।
- संभागियो द्वारा लिखे गए नेतृत्व के गुणों की पर्ची चार्ट पर लगाते हुए समेकित करें। इस प्रकार नेतृत्व गुणों की एक शब्द माला बन जाएगी।
- संदर्भ व्यक्ति नेतृत्व और मूल्य पर संभागियों से आये गुणों से सम्बन्धित एक एक उदहारण (4-5) पर चर्चा करें तथा साझा समझ विकसित की जाए।
- नेतृत्व से सम्बन्धित विशेष गुण प्रत्येक व्यक्ति में होते है जिनके आधार पर वह निर्णय लेते हुए कार्य को सम्पादित करते है इस प्रकार प्रभावी कार्य सम्पादन हो पाता है।

चरण-2 परिस्थिति जन्य समूह चर्चा

- उद्देश्य: **मूल्य-आधारित निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।**
- **प्रक्रिया:**
  - संभागियों को 4–5 सदस्यीय समूहों में बाँटें।
  - सन्दर्भ व्यक्ति विद्यालय, परिवेश से सम्बन्धित परिस्थितियों की पर्चियां लिखकर एक बॉक्स में डाल दें तथा प्रत्येक समूह को एक पर्ची निकालकर कार्य करने हेतु निर्देशित करे। किया जाने वाला कार्य निम्न बिन्दुओं के सापेक्ष सम्पादित हो-
    - परिस्थिति का विवरण
    - परिस्थिति पर हितधारकों के साथ चर्चा
    - परिस्थिति के सम्बन्ध में निर्णय लेना
    - लिए गए निर्णय की क्रियान्विति

उक्त के सन्दर्भ में अपने पूर्व के अनुभवों को ध्यान में रखते हुए सार संक्षेप तैयार कर समूह के साथ प्रस्तुतीकरण के लिए 3-4 मिनट का समय दिया जाए। समूहवार प्रस्तुति के उपरांत सन्दर्भ व्यक्ति अपने अनुभवों को समाहित करते हुए समेकन करें।

विशेष चिंतन बिंदु: यदि वे राष्ट्रीय नेता/कुशल प्रशासक हों तो कौन से **मूल्यों** को अपनाकर समाधान करेंगे?

नमूनार्थ विशेष परिस्थितियाँ-

1. विद्यालय में अनुशासन भंग हुआ।
2. किसी सामाजिक मुद्दे पर निर्णय लेना।
3. पर्यावरण संरक्षण की पहल।
4. विद्यार्थियों में पलायन की प्रवृत्ति।
5. बाल शोषण
6. विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों का अभाव।
7. विद्यार्थियों द्वारा गृह कार्य समय पर नही करना।
8. राष्ट्रीय धरोहरों के प्रति उदासीनता।
9. नैतिक संस्कारों का अभाव आदि।

चरण-3 नेतृत्व गुण मिलान खेल (Matching Game)

- **उद्देश्य:** यह समझना कि किस परिस्थिति में कौन-सा **राष्ट्रीय मूल्य/गुण सबसे ज़रूरी** है।
- **प्रक्रिया:**

- एक कार्ड पर संभागियों को विशेष प्रकार के नेतृत्व वाले गुणों को लिखवाया जाए (जैसे– ईमानदारी, साहस, सहिष्णुता, अनुशासन)।
- दूसरे कार्ड पर विशेष परिस्थिति जुड़े हुए उदहारण लिखने के लिए कहा जाए (जैसे – भ्रष्टाचार से लड़ना, परीक्षा में नकल रोकना, आपदा में मदद करना)।
- दोनों प्रकार के कार्ड पृथक-पृथक बॉक्स में डालकर रख लें तत्पश्चात दो-दो सम्भागियों को आमंत्रित कर नेतृत्व के गुण एवं परिस्थिति के सन्दर्भ में निर्णय लेने के गुण का मिलान कराएं जिससे सम्भागियों के विश्लेषण एवं निर्णय निर्माण की क्षमता को मजबूती मिल सकेगी।
- सन्दर्भ व्यक्ति नेतृत्व के गुण और परिस्थितियों के मिलन उपरांत निम्न 4 बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए साझा समझ विकसित करें तथा संस्था प्रधानों से विद्यालय स्तर पर विकास की कार्य योजना भी बनवाएं इसके लिए आलेख पढ़ने को भी दिया जाए।

1. राष्ट्रीय नेतृत्व की आवश्यकता
2. राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता
3. राष्ट्रीय मूल्यों की आवश्यकता
4. वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

गतिविधि के पश्चात् सन्दर्भ व्यक्ति राष्ट्रीय नेतृत्व एवं राष्ट्रीय चरित्र, राष्ट्रीय मूल्यों की आवश्यकता एवं प्रासंगिकता के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए समेकन करें।

एनईपी 2020 के अनुसार

1) परिचय — क्या और क्यों

NEP 2020 केवल शैक्षणिक विषयों तक सीमित नहीं है; इसका उद्देश्य है एक **समग्र शिक्षा प्रणाली** जो विद्यार्थियों में ज्ञान के साथ-साथ चरित्र, नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और नेतृत्व क्षमताएँ विकसित करे। आज की जटिल वैश्विक व राष्ट्रीय चुनौतियों (प्रौद्योगिकी, वातावरण, सामाजिक असमानता) का हल केवल तकनीकी कौशल से नहीं बल्कि मजबूत नैतिक आधार, सहानुभूति, निर्णय-क्षमता और सामूहिक नेतृत्व से संभव है। इसलिए NEP 2020 में राष्ट्रीय चरित्र व मूल्यों का समावेश अनिवार्य किया गया है।

2) अवधारणात्मक आधार (core concepts)

- **राष्ट्रीय नेतृत्व (National Leadership)**: वह गुण जो व्यक्ति/समूह को राष्ट्रहित में सोचने, निर्णय लेने और सामूहिक कार्रवाई करने में सक्षम बनाते हैं — उदाहरण: दृष्टिकोण, दूरदर्शिता, नैतिक साहस, जिम्मेदारी।
- **राष्ट्रीय चरित्र (National Character)**: सामाजिक व्यवहार और मूल्य — सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहिष्णुता, समावेशिता, कर्तव्यपरायणता, करुणा व सेवा
- **राष्ट्रीय मूल्य (National Values)**: वे प्राथमिकताएँ/मानक जो समाज को जोड़ती हैं — लोकतंत्र, समानता, पर्यावरण-सुरक्षा, सांस्कृतिक सम्मान, श्रम-गौरव आदि।

3) NEP 2020 में निहित रणनीतियाँ (कैसे शामिल किया जाता है)

- **पाठ्यक्रम में समेकन**: राष्ट्रीय मूल्यों को विषयों में समेकित करना — (इतिहास-विरासत, गणित/विज्ञान में परियोजना-आधारित विषयों से सामाजिक प्रभाव इत्यादि)।

- **पाठ्योतर गतिविधियाँ**: हॉउस सिस्टम, विद्यार्थी परिषद, क्लब (इको-क्लब, सेवा-क्लब), सामुदायिक सेवा (service-learning)।
- **अनुभवात्मक शिक्षा**: प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग, फील्ड वर्क, इंटर्नशिप, स्किल-आधारित कार्य।
- **शिक्षक-प्रशिक्षण**: सतत: व्यावसायिक विकास जिससे शिक्षक मूल्य-शिक्षण पढ़ा सकें।
- **आकलन में बदलाव**: केवल परीक्षा नहीं — पोर्टफोलियो, प्रदर्शन, रिफ्लेक्शन जर्नल और व्यवहारिक मानदण्ड।
- **समुदाय भागीदारी**: माता-पिता, पंचायत/नगर, स्थानीय संस्थाएँ व एनजीओ से जुड़ना।

4) विद्यालय-स्तर पर व्यावहारिक क्रियान्वयन (क्या करें)

- **दिनचर्या/संस्कृति**: सुबह-सभा में मूल्य थीम (सहानुभूति, ईमानदारी) + छोटे रिफ्लेक्शन।
- **अनुशासित नेतृत्व संरचनाएँ**: विद्यार्थी परिषद, क्लास-प्रतिनिधि, प्रोजेक्ट-लीडरशिप रोटेशन।
- **माइक्रो-लीडरशिप अवसर**: क्लास वर्क के छोटे-छोटे प्रोजेक्ट जहाँ विद्यार्थी नेतृत्व निभाएँ।
- **सामुदायिक प्रोजेक्ट**: स्थानीय स्वच्छता अभियान, वृक्षारोपण, बुजुर्गों की सेवा, लोक-कला संरक्षण।
- **इंटर्नशिप/वोकेशनल एक्सपोजर**: ग्रेड 6+ से परिचयात्मक व्यावसायिक अनुभव।
- बहुआयामी समस्या समाधान: सीनियर कक्षाओं में सामाजिक/पर्यावरणीय समस्या का हल प्रस्तुत करना।

5) आयु/ग्रेड के अनुसार गतिविधियों के उदाहरण

- **Foundational (3–8 वर्ष)**: कहानियाँ, नाटक, रोल-प्ले, सहानुभूति-गेम्स, पारिवारिक परियोजनाएँ।
- **Middle (8–14)**: सामूहिक प्रोजेक्ट, मॉक पार्लियामेंट, डिबेट, समुदाय-आधारित छोटे अभियान।
- **Secondary (14–18)**: नेतृत्व कार्यशालाएँ, सर्विस-लर्निंग प्रोजेक्ट, इंटर्नशिप, कैपस्टोन प्रोजेक्ट।
- **Higher Ed**: नेतृत्व मॉड्यूल, सामाजिक उद्यमिता, सार्वजनिक नीति पर कार्य, सामुदायिक प्लेसमेंट।

6) मूल्यांकन — किस प्रकार विद्यार्थियों का आंकलन किया जाए (व्यावहारिक तरीके)

- **फॉर्मेटिव असेसमेंट**: रिफ्लेक्शन जर्नल, शिक्षक टिप्पणियाँ, सहकर्मी प्रतिक्रिया।
- **पोर्टफोलियो**: परियोजनाएँ, फोटो/वीडियो, समुदाय से प्रतिक्रिया पत्र।
- **रूब्रिक बनाए**
- **विद्यालयी वातावरण सर्वे**: विद्यार्थी /अभिभावक/शिक्षक के प्रश्नावली से आंकलन।
- **समुदाय-फीडबैक**: स्थानीय संस्थाओं की रिपोर्ट।

1. राष्ट्रीय नेतृत्व की आवश्यकता

- आज की वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक विविधता में हमें ऐसे नेताओं की आवश्यकता है जो **दूरदर्शी, नैतिक और जिम्मेदार** हों।
- केवल राजनीतिक नेतृत्व ही नहीं, बल्कि शिक्षा, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय, संस्कृति और समाज सेवा में भी सशक्त नेतृत्व चाहिए।
- ऐसा नेतृत्व जो **समावेशिता**, **समानता** और **नवाचार** को बढ़ावा दे।
- युवा पीढ़ी को प्रेरित करने वाला नेतृत्व आज की आवश्यकता है, जो राष्ट्र को आत्मनिर्भर और वैश्विक स्तर पर सम्मानजनक बनाए।

2. राष्ट्रीय चरित्र की आवश्यकता

- राष्ट्र का विकास केवल भौतिक साधनों से नहीं, बल्कि नागरिकों के **चरित्र और आचरण** से होता है।

- आज की चुनौतियाँ—भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट—इन्हें केवल **मजबूत राष्ट्रीय चरित्र** से ही सुलझाया जा सकता है।
- राष्ट्रीय चरित्र में शामिल हैं:
  - **ईमानदारी व सत्यनिष्ठा**
  - **कर्तव्यपरायणता**
  - **सामाजिक सहयोग और अनुशासन**
  - **राष्ट्र के प्रति निष्ठा**
- एक सुदृढ़ राष्ट्रीय चरित्र नागरिकों को केवल अपने लाभ के लिए नहीं बल्कि **राष्ट्रहित के लिए कार्य करने** की प्रेरणा देता है।

3. राष्ट्रीय मूल्यों की आवश्यकता
   - बदलते समय में शिक्षा, परिवार और समाज की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।
   - राष्ट्रीय मूल्यों जैसे—**एकता, सहिष्णुता, करुणा, न्याय, समानता, लोकतांत्रिक सोच** और **सामाजिक सद्भाव** को आत्मसात करना आवश्यक है।
   - ये मूल्य न केवल भारतीय संविधान के अनुरूप हैं बल्कि **भारतीय संस्कृति की आत्मा** भी हैं।
   - मूल्यों के अभाव में व्यक्ति और समाज दोनों ही **स्वार्थपरक, विभाजित और असंतुलित** हो जाते हैं।

4. वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता
   - **वैश्वीकरण** के दौर में सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्र की एकता को बनाए रखना।
   - **तकनीकी प्रगति** के साथ नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं का संतुलन।
   - **जलवायु परिवर्तन, बेरोज़गारी, सामाजिक असमानता** जैसी चुनौतियों का समाधान।
   - **युवाओं को राष्ट्र निर्माण** के लिए सही दिशा देना।

समेकन:

राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय मूल्य परस्पर जुड़े हुए स्तंभ हैं। इनकी अनुपस्थिति में राष्ट्र का समग्र विकास संभव नहीं है। यदि नेतृत्व सशक्त हो, चरित्र दृढ़ हो और मूल्य सजीव हों, तो भारत न केवल आत्मनिर्भर बनेगा बल्कि विश्व को भी दिशा देने में सक्षम होगा। इसके लिए विद्यार्थी के रूप में अच्छे नागरिक हमारे विद्यालयों में विकसित हो रहे होंगे। अतः हमारे विद्यालय, कक्षा-कक्षीय गतिविधियों में राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय मूल्य से जुड़े हुए वार्तालाप नियमित रूप से किए जाने अपेक्षित है।

सत्र : 5 शैक्षिक संदर्भ में संवैधानिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की समझ

समय : 90 मिनट

अवधारणा:

"संवैधानिक नैतिकता कोई स्वाभाविक भावना नहीं है। इसे विकसित करना होता है।"

- डॉ. भीमराव अम्बेडकर

डॉ. अम्बेडकर के उपरोक्त वक्तव्य में एक लोकतान्त्रिक एवम सभ्य समाज के विकास के निर्माण हेतु नागरिकों के आचार, विचार एवम व्यवहार में संवैधानिक मूल्यों का होना प्रथम शर्त है। लोकतान्त्रिक समाज में किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व में यह गुण जन्मजात नहीं होते है, इनका विकास क्रमिक रूप से होता है एवम इस क्रमिक विकास का सबसे प्रमुख स्रोत यदि शिक्षा को माना जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि एक बालक के एक जिम्मेदार नागरिक बनने की सम्पूर्ण यात्रा में उसके शैक्षिक परिवेश की महती भूमिका रहती है।

किन्तु वर्तमान आधुनिक समाज में जिस प्रकार आधुनिक संस्कृति के नाम पर पाश्चात्य शैली को व्यवहार में लाया जा रहा है, उससे संवैधानिक मूल्यों के साथ साथ नैतिकता का भी ह्रास हो रहा है। इस हेतु शिक्षा व्यवस्था से यह अपेक्षा की जाती है कि विद्यार्थियों मे संवैधानिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की समझ को प्रारम्भ से ही विकसित किया जाये और ऐसे शैक्षणिक शैक्षिक परिवेश को विकसित करने की जिम्मेदारी प्राथमिक रूप से नेतृत्वकर्ता संस्था प्रधान की हो।

उद्देश्य :

1. संवैधानिक मूल्यों,नैतिक मूल्यों एवम मानवीय मूल्यों के प्रति समझ विकसित करना।
2. संवैधानिक मूल्यों,नैतिक मूल्यों एवम मानवीय मूल्यों के परस्पर अंतर्संबंध को समझना।
3. सभ्य समाज के निर्माण में संवैधानिक मूल्यों, नैतिकता एवम मानवीयता के महत्व को समझना।
4. विद्यालय में संवैधानिक मूल्यों, नैतिकता एवम मानवीयता आधारित परिवेश के निर्माण एवम विकास में संस्था प्रधान की भूमिका को समझना।

आवश्यक सामग्री :- A4 साइज पेपर (40),कार्डशीट (1), स्केच कलर, मार्कर

गतिविधि

चरण- 1: मूल्यों का पहिया

- मूल्यों पर आधारित पहिया (यह पहिया पाई चार्ट के तरीके से बनेगा) जिसमें मूल्य लिखे हो घुमाकर मूल्य बताने को कहें।
- जो मूल्य पहिया घूमने के बाद आया उस मूल्य के महत्व और प्रासंगिकता पर अपने विचार प्रकट करने को कहें। विचार आने के पश्चात् संदर्भ व्यक्ति इन मूल्यो को संवैधानिक मूल्यों,नैतिक मूल्यों एवम मानवीय मूल्यों में वर्गीकृत करवाए। वर्गीकरण के लिए बोर्ड पर तीन खाने बना लें व इन मूल्यों के नाम लिख लें। चर्चा करते हुई सभी

मूल्यों के आने के पश्चात् इनके अभिप्राय, अंतर्संबंध व शैक्षिक महत्व पर विमर्श पर स्पष्ट करवाने का प्रयास करें।

गतिविधि उपरान्त चर्चा का समेकन कर संवैधानिक एवम नैतिक-मानवीय मूल्यों से अभिप्राय एवं अंतर्संबंध पर अवधारणात्मक समझ विकसित की जाये।

संवैधानिक, नैतिक एवम मानवीय मूल्य : अभिप्राय: एवं अंतर्संबंध

संवैधानिक मूल्य:-

प्रमुख संवैधानिक मूल्य निम्नलिखित हैं:

1. समानता: सभी नागरिकों को समान अधिकार और अवसर प्रदान करना।
2. न्याय: सभी नागरिकों को न्याय और समानता का समर्थन करना।
3. स्वतंत्रता: नागरिकों को अपनी स्वतंत्रता और अधिकारों का उपयोग करने का अवसर प्रदान करना।
4. धर्मनिरपेक्षता: सभी धर्मों के प्रति समानता और सम्मान का भाव रखना।
5. मानवाधिकार: मानवाधिकारों की रक्षा करना और नागरिकों के अधिकारों का समर्थन करना

नैतिक मूल्य:-

1. सत्यनिष्ठा: सच्चाई और ईमानदारी के साथ कार्य करना।
2. निष्पक्षता: बिना किसी पक्षपात के निर्णय लेना और सभी के साथ समान व्यवहार करना।
3. न्याय: सभी व्यक्तियों के लिए न्याय और समानता का समर्थन करना।
4. जिम्मेदारी: अपने कार्यों के लिए जिम्मेदारी लेना और उनके परिणामों को स्वीकार करना।
5. ईमानदारी: अपने वादों और प्रतिबद्धताओं को पूरा करना।

मानवीय मूल्य:-

1. सम्मान: दूसरों के प्रति सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार करना।
2. सहानुभूति: दूसरों की भावनाओं और जरूरतों को समझना और उनकी मदद करना।
3. करुणा: दूसरों के प्रति दया और करुणा का भाव रखना।
4. सहयोग: दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना और उनकी मदद करना।
5. मानवता: सभी व्यक्तियों को मानवता के आधार पर सम्मान और गरिमा के साथ व्यवहार करना।

मानवीय एवम नैतिक मूल्य तथा संवैधानिक मूल्यों में अंतर्संबंध

1. कानूनी समर्थन: संवैधानिक मूल्य मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को कानूनी समर्थन प्रदान करते हैं।
2. सामाजिक संरचना: संवैधानिक मूल्य समाज की संरचना को आकार देते हैं और मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को बढ़ावा देते हैं।
3. व्यक्तिगत विकास: संवैधानिक मूल्य व्यक्तिगत विकास में मदद करते हैं और मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं।

शैक्षिक महत्व

1. **मूल्यों का विकास**: शिक्षा के माध्यम से संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास किया जा सकता है।
2. आदर्श नागरिकों का निर्माण: शिक्षा के माध्यम से नागरिकों का निर्माण किया जा सकता है जो संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों को समझते हैं और उनका पालन करते हैं।
3. **समाज का विकास:** शिक्षा के माध्यम से समाज का विकास किया जा सकता है जो संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित हो।

गतिविधि 2: क्विज़

विषय: संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित क्विज़ का आयोजन करना।

उद्देश्य: संभागियों की संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों पर समझ का मूल्यांकन करना।

प्रक्रिया: संभागियों को क्विज़ में भाग लेने के लिए कहें और उन्हें संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों से संबंधित प्रश्न पूछें।

संवैधानिक मूल्य एवं शिक्षा पर क्विज़ निम्नलिखित हो सकती है:

प्रश्न 1: संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा में शामिल करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

ए) विद्यार्थियों को संविधान के बारे में जानकारी प्रदान करना

बी) विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों को विकसित करना

सी) विद्यार्थियों को राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना

डी) विद्यार्थियों को सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में सिखाना

उत्तर: (बी) विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों को विकसित करना

प्रश्न 2: निम्नलिखित में से कौन सा संवैधानिक मूल्य शिक्षा में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है?

ए) समानता बी) स्वतंत्रता सी) न्याय डी) सभी

उत्तर: डी) सभी

प्रश्न 3: संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा में शामिल करने से क्या लाभ होता है?

ए) विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है

बी) विद्यार्थियों में समानता और न्याय की भावना विकसित होती है

सी) विद्यार्थियों में स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की भावना विकसित होती है

डी) सभी **उत्तर: डी) सभी**

प्रश्न 4: शिक्षा में संवैधानिक मूल्यों को शामिल करने के लिए क्या कदम उठाए जा सकते हैं?

ए) पाठ्यक्रम में संवैधानिक मूल्यों को शामिल करना

बी) शिक्षकों को संवैधानिक मूल्यों पर प्रशिक्षण प्रदान करना

सी) विद्यार्थियों को संवैधानिक मूल्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना

डी) सभी **उत्तर: डी) सभी**

प्रश्न 5: संवैधानिक मूल्यों को शिक्षा में शामिल करने से विद्यार्थियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

ए) विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है

बी) विद्यार्थियों में समानता और न्याय की भावना विकसित होती है

सी) विद्यार्थियों में स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की भावना विकसित होती है

डी) सभी **उत्तर:डी) सभी**

6. भारत के संविधान में किस अनुच्छेद में समानता का अधिकार दिया गया है?

7. भारत के संविधान में किस अनुच्छेद में स्वतंत्रता का अधिकार दिया गया है?

8. भारत के संविधान में किस अनुच्छेद में न्याय का अधिकार दिया गया है?

9. संवैधानिक मूल्यों में से एक कौन सा है जो सभी नागरिकों को समान अवसर प्रदान करता है?

10 संवैधानिक मूल्यों में से एक कौन सा है जो नागरिकों को अपने विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है?

उत्तर

6. अनुच्छेद 14 7. अनुच्छेद 19 8 अनुच्छेद 14 और 21

9. समानता 10. स्वतंत्रता

उपरोक्त गतिविधि करने के पश्चात् पूरे समूह को चार समूह में विभाजित कर निम्न केस स्टडी पढ़ने को दें व उन्हे पढ़ने के पश्चात् विश्लेषण व अंतर्संबंध स्थापित करने को कहें।

केस स्टडी

एक छोटे से गाँव में एक विशेष समुदाय का परिवार रहता था। उनके पास जमीन नहीं थी और वे दूसरे लोगों की जमीन पर मजदूरी करते थे। एक दिन, गाँव के कुछ लोगों ने इस परिवार को उनके समुदाय के कारण जमीन पर काम करने से रोक दिया। इस परिवार ने इसकी शिकायत गाँव के पंचायत में की, लेकिन पंचायत ने उनकी शिकायत को नजरअंदाज कर दिया।

इस परिवार ने इसके बाद जिला प्रशासन से संपर्क किया और अपनी शिकायत दर्ज कराई। जिला प्रशासन ने मामले की जांच की और पाया कि परिवार के साथ भेदभाव किया गया था। जिला प्रशासन ने ग्राम पंचायत को निर्देश दिया कि वे इस परिवार को जमीन पर काम करने की अनुमति दें और उनके साथ भेदभाव न करें।

विश्लेषण:

इस केस स्टडी में मानवीय एवं नैतिक मूल्यों जैसे कि समानता, न्याय और सम्मान का उल्लंघन हुआ था। विशेष समुदाय के परिवार के साथ भेदभाव करना और उन्हें जमीन पर काम करने से रोकना मानवीय एवं नैतिक मूल्यों के विरुद्ध था।संवैधानिक मूल्यों जैसे कि समानता और न्याय का भी उल्लंघन हुआ था। संविधान के अनुच्छेद 14 और 17 में समानता और जाति के आधार पर भेदभाव का निषेध किया गया है।

अंतर्संबंध:इस केस स्टडी में, मानवीय एवं नैतिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों के बीच एक गहरा अंतर्संबंध है। मानवीय एवं नैतिक मूल्यों का उल्लंघन संवैधानिक मूल्यों का भी उल्लंघन करता है। संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करने से मानवीय एवं नैतिक मूल्यों की भी रक्षा होती है।

निष्कर्ष: इस केस स्टडी से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवीय एवं नैतिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों के बीच एक गहरा अंतर्संबंध है। दोनों का उल्लंघन समाज में असमानता और अन्याय को बढ़ावा देता है। इसलिए, हमें मानवीय एवं नैतिक मूल्यों और संवैधानिक मूल्यों की रक्षा करने के लिए काम करना चाहिए।

उपरोक्त कार्य को करने के पश्चात् संदर्भ व्यक्ति एक से दो समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण करवाए अन्य समूह के साथ कुछ और जोड़ना चाहे तो कहने का मौका दें। इसके पश्चात् पूरे समूह से प्रश्न करें **ऐसी स्थिति में संस्था प्रधान की क्या ज़िम्मेदारी बनती है।** उनके विचार आने पर सत्र को निम्न बाते कहते हुए समेकित करें।

समेकन :

डॉ. अम्बेडकर के विचारों के आधार पर सत्र का केंद्र बिंदु रहा कि संवैधानिक, नैतिक और मानवीय मूल्य लोकतांत्रिक समाज की नींव हैं तथा शिक्षा इनके विकास का प्रमुख साधन है। संवैधानिक मूल्य कानूनी आधार देते हैं, नैतिक मूल्य चरित्र व जिम्मेदारी को मजबूत करते हैं और मानवीय मूल्य सहानुभूति व सहयोग की भावना जगाते हैं। तीनों मूल्य परस्पर पूरक हैं। उक्त गतिविधियों (मूल्यों का पहिया, क्विज़, केस स्टडी) से उनकी प्रासंगिकता व महत्व समझा गया। विद्यालय, विशेषकर संस्था प्रधान, इन मूल्यों पर आधारित वातावरण बनाकर आदर्श नागरिक तैयार कर सकते हैं। आने वाले सत्रो में हमारे विद्यालय इन मूल्यों को कैसे पल्लवित और पुष्पित कर सकते है इस पर विस्तार से कार्य करेंगे।

सत्र:6 राष्ट्रीय चरित्र एवं राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित विद्यालय संस्कृति

(NEP 2020 के संदर्भ में)

समय : **90 मिनट**

अवधारणा:

विद्यालय संस्कृति का अर्थ है- किसी विद्यालय का वह समग्र वातावरण, सोच, व्यवहार और परंपराएँ जो वहाँ के विद्यार्थियों, शिक्षकों और कर्मचारियों के आचार-व्यवहार में दिखाई देती हैं। NEP 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) इस पर विशेष बल देते हैं कि *"विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्यों न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व का समावेश, सहयोगात्मक वातावरण, समावेशिता और रचनात्मकता की स्थापना आवश्यक है।*" विद्यालय संस्कृति केवल शिक्षण का वातावरण नहीं, बल्कि एक ऐसी जीवनशैली है जो मूल्यों, परंपराओं और व्यवहार के माध्यम से विद्यार्थियों के जीवन को आकार देती है। विद्यालय केवल ज्ञानार्जन का केंद्र नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के राष्ट्रीय चरित्र, नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व निर्माण की भूमि है। विद्यालय संस्कृति वह वातावरण है जिसमें विद्यार्थी न केवल पढ़ते हैं बल्कि जीवन के आदर्श सीखते हैं। भारतीय परंपरा में विद्यालय (गुरुकुल से लेकर आधुनिक विद्यालय तक) को "विद्या का मंदिर" माना गया है, जहाँ शिक्षा का उद्देश्य मात्र रोजगार न होकर सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् मूल्यों पर आधारित जीवन का निर्माण है। NEP 2020 इस पर बल देती है कि विद्यालय संस्कृति-

- संवैधानिक मूल्य (न्याय, समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व)
- राष्ट्रीय चरित्र (अनुशासन, समयपालन, सेवा, नेतृत्व, जिम्मेदारी, पर्यावरण चेतना, करुणा)
- भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो।

उद्देश्य

1. विद्यालय संस्कृति की परिभाषा, विशेषताओं एवं महत्व को समझ सकेंगें
2. NEP 2020 की अपेक्षाओं के अनुरूप विद्यालय संस्कृति निर्माण की रणनीतियाँ समझ सकेंगें
3. गतिविधियों के माध्यम से अपने विद्यालय की संस्कृति के आत्म-मूल्यांकन को समझ सकेंगें

सामग्री-पेपर, कलर, चार्ट

गतिविधि:

चरण-1: केस स्टडी व समूह चर्चा

सन्दर्भ व्यक्ति संभागियों को आवश्यकतानुसार चार या पांच समूह में विभाजित करेंगे और समूह के सदस्यों को विभिन्न उत्तरदायित्व प्रदान करेंगें जैसे- टीम लीडर, अनुशासन प्रभारी, सामग्री प्रभारी आदि। सन्दर्भ व्यक्ति नीचे दी गयी केस स्टडी संभागियों को पढ़ने के लिए दें एवं उसके बाद नीचे दिए गए प्रश्नों पर केस स्टडी को आधार बना कर अनुभव तथा प्रतिक्रियाएं समूह के माध्यम से प्रस्तुत कराएँ

केस स्टडी-

एक विद्यालय में लंबे समय तक सफलता का पैमाना केवल परीक्षा परिणाम को माना जाता था। विद्यालय प्रशासन और अधिकांश शिक्षक यह मानते थे कि यदि विद्यार्थी अच्छे अंक लाएँगे तो ही विद्यालय की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। इस सोच के कारण वातावरण में कई नकारात्मक प्रभाव दिखाई देने लगे। विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती थी कि वे हर कीमत पर अधिक से अधिक अंक प्राप्त करें। इस कारण विद्यार्थियों पर पढ़ाई और परीक्षा का अत्यधिक दबाव था, जिससे उनमें तनाव और चिंता बढ़ने लगी। आपसी प्रतिस्पर्धा अस्वस्थ हो गई और सहयोग की भावना धीरे-धीरे समाप्त होने लगी।

विशेष रूप से बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थियों को केवल पढ़ाई पर ही केंद्रित रहने को कहा जाता था। जब भी विद्यालय में सांस्कृतिक, खेल या अन्य रचनात्मक गतिविधियाँ आयोजित होतीं, तो अक्सर शिक्षकों द्वारा बोर्ड क्लासेज के विद्यार्थियों को भाग लेने से मना कर दिया जाता था उन्हें ।यह समझाया जाता कि ये गतिविधियाँ समय की बर्बादी हैं और उनका पूरा ध्यान केवल पढ़ाई और परीक्षा पर होना चाहिए। इतना ही नहीं जो विद्यार्थी खेलकूद, कला या सेवा-भाव से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय रहते थे उन्हें भी अक्सर हीनदृष्टि से देखा जाता था। शिक्षकों और साथियों की नज़र में वे "कमज़ोर विद्यार्थी " माने जाते, जबकि केवल पढ़ाई में टॉप करने वाले ही सबसे श्रेष्ठ और विद्यालय के गौरव के प्रतीक समझे जाते थे।

इस वातावरण ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता, विविध प्रतिभाओं और आत्मविश्वास को दबाना शुरू कर दिया। कई विद्यार्थी जो खेल, कला, सेवा या नेतृत्व क्षमता में उत्कृष्ट थे, वे उपेक्षित और हतोत्साहित महसूस करने लगे। शिक्षा का उद्देश्य संकुचित होकर केवल अंकों तक सीमित रह गया।

ऐसी स्थिति में विद्यालय के प्राचार्य ने नवाचारी पहल की। उन्होंने शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों को एक साझा मंच पर बुलाया और स्पष्ट संदेश दिया कि शिक्षा का असली उद्देश्य केवल अंक प्राप्त करना नहीं है। उन्होंने कहा कि हर बच्चा अद्वितीय है और उसकी अपनी-अपनी क्षमताएँ हैं जिन्हें पहचानने और निखारने की ज़रूरत है। प्राचार्य ने यह भी रेखांकित किया कि खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सेवा-भावी गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि इन्हीं से सहयोग, अनुशासन, नेतृत्व और जिम्मेदारी जैसी जीवन कौशल विकसित होती हैं। इसके बाद विद्यालय संस्कृति में कई बदलाव किए गए। विद्यालय में बाल संसद शुरू की गई, जिससे विद्यार्थियों को लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को समझने और उनमें भागीदारी का अवसर मिला। हर सप्ताह एक "मूल्य दिवस" मनाया जाने लगा, जहाँ विद्यार्थी सत्य, सहयोग, सेवा, अनुशासन और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर गतिविधियाँ करते थे। NCC, NSS और स्काउट-गाइड जैसी गतिविधियों को विद्यालय जीवन का हिस्सा बनाया गया, जिससे विद्यार्थियों में अनुशासन, सेवा-भाव और नेतृत्व कौशल का विकास हुआ।

विद्यालय में इन पहलों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देने लगा। विद्यार्थियों में तनाव कम हुआ और उनका आत्मविश्वास बढ़ा। अब विद्यालय में केवल टॉपर्स ही नहीं, बल्कि खेलकूद, सेवा और रचनात्मक क्षेत्रों में प्रतिभा दिखाने वाले विद्यार्थियों को भी उचित सम्मान मिलने लगा। प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग और आपसी सम्मान की भावना विकसित हुई। शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच संवाद अधिक सकारात्मक और घनिष्ठ हुआ। अभिभावक भी विद्यालय की गतिविधियों से सक्रिय रूप से जुड़ने लगे। विद्यालय की पहचान अब केवल परीक्षा परिणामों तक सीमित न रहकर एक ऐसे संस्थान के रूप में बनने लगी, जहाँ राष्ट्रीय मूल्यों, चरित्र निर्माण और समग्र शिक्षा को वास्तविक रूप से बढ़ावा दिया जाता है।

केस स्टडी आधारित चर्चा के प्रश्न

1. क्या केवल परीक्षा परिणाम विद्यार्थियों की सफलता का पैमाना होना चाहिए? (हाँ/नहीं)
2. क्या आपके स्कूल में खेलकूद और सांस्कृतिक गतिविधियों को पर्याप्त महत्व मिलता है? (हाँ/नहीं)
3. खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियों और सेवा-भावी कार्यों को नजरअंदाज करने के क्या नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं?
4. आप किस पहल को अपने स्कूल में तुरंत लागू करेंगे? (बाल संसद, मूल्य दिवस, NCC/NSS, अन्य)
5. कैसे विद्यालय में सहयोग और प्रतिस्पर्धा की स्वस्थ भावना विकसित की जा सकती है?
6. शिक्षकों और अभिभावकों की भूमिका विद्यार्थियों के समग्र विकास में कैसी होनी चाहिए?
7. यदि आप इस विद्यालय के शिक्षक या प्राचार्य होते, तो आप और कौन-सी पहल करते ताकि सभी विद्यार्थियों का विकास समान रूप से हो?
8. यह केस स्टडी राष्ट्रीय मूल्य और चरित्र निर्माण के संदर्भ में हमें क्या संदेश देती है?
9. विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को बढ़ाने के लिए स्कूल में कौन-सी गतिविधियाँ अपनाई जा सकती हैं?
10. क्या इस तरह के बदलाव किसी भी स्कूल में लागू किए जा सकते हैं? अगर हाँ तो किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है?

सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा इन सब बिन्दुओं पर चर्चा के निष्कर्ष को पीपीटी / हैंड आउट द्वारा समेकित किया जाना है।

चरण: 2 सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा सभी संभागियों को अपने अपने विद्यालय के स्वमूल्यांकन के लिए गूगल फॉर्म या प्रिंटेड हैंड आउट के माध्यम से गतिविधि करवाई जानी है।

स्कोरिंग तरीका

1-बिल्कुल नहीं **2**-बहुत कम लागू **3**-आंशिक रूप से लागू **4**-अधिकांशतः लागू **5**-पूरी तरह लागू

स्व मूल्यांकन चेकलिस्ट

1- संस्था प्रधानों के लिए

नोट:- प्रत्येक खंड का औसत स्कोर निकालकर संस्था प्रधान को पता चलेगा कि कौन-सा क्षेत्र मज़बूत है और कहाँ सुधार की आवश्यकता है।

A. राष्ट्रीय मूल्य

1. संवैधनिक मूल्यों (समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व, न्याय) को विद्यालय गतिविधियों में समाहित किया जाता है।
2. विद्यालय विविधता में एकता के मूल्यों को व्यवहार में दर्शाता है।
3. विद्यार्थियों में सेवा, सहयोग, पर्यावरण संरक्षण और जिम्मेदारी की भावना विकसित की जाती है।
4. विद्यालय में लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ (बाल संसद, मतदान, निर्णय में भागीदारी) लागू हैं।

B. राष्ट्रीय चरित्र निर्माण

1. विद्यार्थियों में अनुशासन, समयपालन और ईमानदारी का अभ्यास कराया जाता है।
2. नेतृत्व विकास हेतु NCC, NSS, स्काउट-गाइड या समान कार्यक्रम उपलब्ध हैं।
3. विद्यार्थियों में टीमवर्क और सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है।
4. विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानियों और प्रेरणादायी व्यक्तित्वों से जोड़ा जाता है।
5. 21वीं सदी के कौशलों पर फोकस किया जाता हैं।

C. विद्यालय का वातावरण

1. परिसर स्वच्छ, सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल है।
2. विद्यालय समावेशी वातावरण देता है जहाँ सभी विद्यार्थी (लड़कियाँ, विकलांग, अल्पसंख्यक) समान अवसर एवं सम्मान पाते हैं।
3. विद्यार्थियों और शिक्षकों एवं संस्था प्रधान के मध्य सम्मानजनक, सहयोगी आत्मीय व्यवहार है।
4. विद्यालय में सांस्कृतिक, खेल और कला गतिविधियाँ नियमित रूप से होती हैं।

D. शिक्षक स्तर

1. शिक्षक स्वयं आदर्श (Role Model) के रूप में मूल्य और चरित्र का पालन करते हैं।
2. शिक्षक विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण विधियाँ अपनाते हैं।
3. विद्यार्थियों की भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है।

4. शिक्षक निरंतर व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण में भाग लेते हैं।
5. शिक्षकों के बीच सहयोग और साझा उत्तरदायित्व की भावना है।

E. विद्यार्थी स्तर

1. विद्यार्थी विद्यालय की नीतियों और गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।
2. विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित है।
3. विद्यार्थी डिजिटल साक्षरता और जिम्मेदार उपयोग का अभ्यास करते हैं।
4. विद्यार्थियों को जीवन कौशल (समस्या समाधान, संवाद, आत्मविश्वास, नेतृत्व) सिखाए जाते हैं।
5. विद्यार्थी जिला/राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक, खेल या शैक्षणिक गतिविधियों में सहभागिता करते हैं।

F. अभिभावक और समुदाय स्तर

1. शिक्षक अभिभावक परिषद बैठकें नियमित होती हैं और केवल अंकों पर नहीं बल्कि चरित्र और मूल्य विकसित पर चर्चा होती है।
2. विद्यालय स्थानीय संसाधनों (कला, परंपरा, विशेषज्ञ व्यक्ति) का अधिकतम उपयोग करता है।
3. अभिभावक विद्यालय की गतिविधियों (सांस्कृतिक, खेल, सामाजिक सेवा) में सहयोग करते हैं।
4. विद्यालय समुदाय से सामाजिक उत्तरदायित्व पर सहभागिता निभाता है।

G. नीति और संसाधन स्तर

1. विद्यालय में पुस्तकालय, प्रयोगशालाएँ, खेल और सांस्कृतिक संसाधन पर्याप्त हैं।
2. डिजिटल संसाधनों (Smart Class, ICT Lab, Online Tools) का जिम्मेदार उपयोग होता है।
3. विद्यालय समग्र शिक्षा (Holistic Education) को बढ़ावा देता है।
4. विद्यालय NEP 2020 के मूल सिद्धांतों (समावेशी शिक्षा, बहुभाषिकता, कौशल आधारित शिक्षा) को अपनाता है।

विभिन्न क्षेत्रों में किए गए स्व आकलन का विश्लेषण करते हुए न्यून स्कोर वाले बिन्दुओं पर सुधार के लिए कार्य किया जाना अपेक्षित है

चरण 3: रणनीति निर्माण

उपरोक्त स्वमूल्यांकन से आधार ले कर सभी संभागी अपने अपने विद्यालय में उन क्षेत्रो को पहचान पाएंगे जहाँ उन्हें फोकस करने की आवश्यकता है। संभागी अपने अपने मूल्यांकन के आधार पर अपनी अपनी कार्ययोजना प्लान बनाएंगे।

- संभागी अपने विद्यालय के लिए **3–5 प्राथमिक पहलों** की कार्ययोजना तैयार करें
- विद्यालय संस्कृति में चुनौतियों और समाधान हेतु विज़न स्टेटमेंट तैयार करना

विज़न स्टेटमेंट के प्रमुख बिंदु:-

1. साझा दृष्टि और उद्देश्य	5. समावेशिता और समान अवसर
2. संवैधानिक मूल्य और नैतिकता	6. अभिभावक और समुदाय सहभागिता
3. विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण	7. उत्तरदायित्व की भावना
4. शिक्षक–विद्यार्थी जुड़ाव	8. निरंतर मूल्यांकन और सुधार

समेकन

मॉड्यूल का उद्देश्य विद्यालय प्राचार्यों को राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय मूल्यों पर आधारित समग्र विद्यालय संस्कृति का महत्व समझाना है। NEP- 2020 के अनुसार शिक्षा केवल परीक्षा परिणाम तक सीमित नहीं होनी चाहिए बल्कि यह विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक और नेतृत्व कौशल के विकास पर केंद्रित होनी चाहिए।

मॉड्यूल में केस स्टडी के माध्यम से वास्तविक चुनौतियों और समाधान प्रस्तुत किए गए हैं, जिससे संभागियों को अपने विद्यालय में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में सोचने और चर्चा करने का अवसर मिलता है। समूह चर्चा, स्वमूल्यांकन और चरणबद्ध कार्य योजना एवं गतिविधियों के माध्यम से संभागी अपने विद्यालय की वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन करते हैं और सुधार के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ विकसित करते हैं। इस प्रक्रिया से विद्यालय में सहयोग, समावेशिता, रचनात्मकता और नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मिलता है, जिससे विद्यार्थियों का समग्र विकास, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता सशक्त होती है।

- विद्यालय संस्कृति एक सतत और सामूहिक प्रक्रिया है
- राष्ट्रीय मूल्य, राष्ट्रीय चरित्र, शिक्षक–विद्यार्थी जुड़ाव, बेहतर कार्य संस्कृति, उत्तरदायित्व की भावना - ये सभी मिलकर विद्यालय को एक आदर्श शिक्षा-परिवेश बनाते हैं
- NEP 2020 का लक्ष्य है कि हर विद्यालय केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रहकर मूल्य-आधारित, जिम्मेदार और सकारात्मक राष्ट्र निर्माण का केंद्र बने।

सत्र: 7 राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण एवं राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना में संस्था प्रधानों की भूमिका

समय-90 मिनट

अवधारणा:

संस्था प्रधान राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उनके नेतृत्व में संस्था की छवि झलकती है, वे शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बनते हैं और नैतिक मूल्य, नवाचार व समग्र राष्ट्रीय विकास के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देते हैं। वे चरित्र-आधारित नेतृत्व, सहानुभूतिपूर्ण संवाद और साझा मूल्यों को बढ़ावा देकर एक सकारात्मक, नैतिक और प्रेरक वातावरण बनाते हैं जिससे व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से राष्ट्र के निर्माण में योगदान होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसे स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया **है विद्यालय केवल ज्ञान देने का स्थान नहीं है, बल्कि वह एक ऐसा सामाजिक-शैक्षिक केंद्र है जहाँ भविष्य के नागरिकों का निर्माण होता है। विद्यालय के इस महत्त्वपूर्ण कार्य का नेतृत्व संस्था प्रधान (Principal/Head Teacher) करते हैं।** संस्था प्रधान के निर्णय और दृष्टिकोण से विद्यालय की संस्कृति और विद्यार्थियों का सीखना गहराई से प्रभावित होता है, इसलिए इसे समझना और जरूरी भी हो जाता है। NEP 2020 में भी इसे स्पष्टता के साथ उभारा गया है कि संस्था प्रधान-

- विद्यालय को ऐसा वातावरण दें जहाँ संविधानिक मूल्य (न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व) जीवन्त हों।
- विद्यार्थियों और शिक्षकों में चरित्र निर्माण (ईमानदारी, अनुशासन, करुणा, जिम्मेदारी, सहयोग) को बढ़ावा दें।
- विद्यालय को राष्ट्रीय नेतृत्व की प्रयोगशाला बनाएँ, जहाँ विद्यार्थी न केवल ज्ञान प्राप्त करें बल्कि एक जागरूक, जिम्मेदार और जिम्मेदार नागरिक के रूप में विकसित हों।
- शिक्षक, अभिभावक और समुदाय के साथ मिलकर विद्यालय को मूल्य-आधारित सीखने वाले समुदाय (Values-based Learning Community) में बदलें।

उद्देश्य:-

- संविधान और NEP 2020 में वर्णित मूल्यों (न्याय, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व) को विद्यालय की गतिविधियों और संस्कृति में कैसे शामिल किया जाए, इसकी रणनीति को समझ सकेंगे।
- संस्थाप्रधान ऐसे नेतृत्व के कौशल को समझ सकेंगे जिससे शिक्षक, विद्यार्थी और समुदाय में राष्ट्रीय मूल्यों के अनुरूप वातावरण बना सकें।
- विभिन्न केस स्टडी से सीख लेकर, अपने विद्यालय में मूल्य आधारित परिवर्तन की योजना बनाना समझ सकेंगे।

आवश्यक सामग्री:- चार्ट, कलर, क्रियोंन

गतिविधि- 1:- अपने विद्यालय की परिकल्पना (Vision Building Activity)

संभागियों को तीन-चार उपसमूहों में विभाजित किया जायेगा, उसके पश्चात् उन्हे 1 परिस्थिति पर कार्य करने को कहा जायेगा। चार्ट देकर इसे निम्नलिखित सवालों/स्थिति के तहत सोचने के लिए कहा जाए-

इससे संबंधित तथ्य, संकल्पना लिख सकते हैं।

संकल्पना के अनुसार विद्यालय का रेखा-चित्र बना सकते हैं।

इसके पश्चात् किए गए कार्य का समूह द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जायेगा।

1. कल्पना कीजिए कि आपके विद्यालय में सभी राष्ट्रीय मूल्य और चरित्र निर्माण पूरी तरह जीवंत हैं। वह विद्यालय कैसा दिखेगा(जैसे- अनुशासन, विविधता, समानता, सहयोग, जिम्मेदारी, स्वच्छता, नेतृत्व आदि के संदर्भ में)
2. विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व मनाये जाते हैं जिनमें विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी नहीं होती है या मूल्यों पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है। संस्थाप्रधान के रूप में आप इस परिस्थितियों को बदलने के लिए क्या पहल करेंगे?
3. एक विद्यालय में विविधता (शिक्षक, विद्यार्थी, समुदाय की जाति, समुदाय, धर्म) को आप कैसे देखते हैं? विद्यालय को समावेशी बनाने के लिए आप क्या परिवर्तन करेंगे।

प्रस्तुतिकरण के दौरान संदर्भ व्यक्ति प्रस्तुत करने वाले समूह में शामिल मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर लिखते रहे है विमर्श करते समय संदर्भ व्यक्ति इसका विशेष ध्यान रखे कि जिन उद्देश्यों को सत्र के प्रारंभ में शामिल किया गया है आवश्यक है कि चर्चा विषयगत (राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण, एवं राष्ट्रीय मूल्यों) संदर्भ में ही केंद्रित रहे, जिससे वास्तविक समस्याओं पर नेतृत्व और मूल्य-आधारित निर्णय करने का अभ्यास हो सकेगा।

समेकन:-

सभी समूहों के साझा करने के उपरांत संदर्भ व्यक्ति स्थापित करेंगे कि राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र निर्माण और मूल्यों का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को सिखाना नहीं बल्कि विद्यालय की **संस्कृति** को इन मूल्यों पर आधारित बनाना है और इसमें संस्था प्रधान का आचरण, निर्णय और नेतृत्व सबसे बड़ी भूमिका निभाते हैं। हमें अपनी भूमिका को केवल एक पक्ष से ही नहीं बल्कि समस्त विद्यालय, शिक्षक-शिक्षको, शिक्षक-विद्यार्थियों के मध्य ये कैसे पोषित हों, इस नजरिए से अवश्य समझना होगा। तभी हम हमारे विद्यार्थियों को समाज उपयोगी वैश्विक नागरिक बना पाएंगे जिनमें ये सभी गुण पोषित होंगें। (NEP-2020)

गतिविधि 2:-

राष्ट्रीय नेतृत्व और मूल्य-आधारित शिक्षा के सन्दर्भ में NEP 2020 में संस्था प्रधान से अपेक्षाएँ:-

सामग्री- संविधान की प्रस्तावना का प्रिन्ट एवं प्रश्नों की सूची।

प्रश्न:- शैक्षिक सन्दर्भ में संवैधानिक, नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की समझ वाले सत्र में हमने संविधान प्रस्तावना को समझा था। अब आप बताए कि राष्ट्रीय मूल्यों की पहचान हेतु-

1. संविधान की प्रस्तावना से हम क्या प्रेरणा ले सकते हैं?
2. संवैधानिक मूल्यों को हम अपने विद्यालय में कैसे विकसित होते हुए देखते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तरों में संभागी अपने विद्यालय से जुड़े अनुभवों को साझा करेंगे। मुख्य बिन्दुओं को संदर्भ व्यक्ति बोर्ड पर दर्ज करते रहें। उसके पश्चात् न्याय, स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व विकसित करने के लिए संस्था प्रधान अपने विद्यालय में पोषित करने के लिए क्या करने की जरूरत होगी, इसके लिए संदर्भ व्यक्ति संभागियों को चार समूहों में विभाजित करेंगे और इन प्रश्नों के सापेक्ष प्रस्तुत किए जा रहे मुख्य बिन्दुओं को समेकित कर साझा करेंगे।

चर्चा के बाद संदर्भ व्यक्ति इसे मूल्यों के सन्मुख लिखे गए अभ्यासों से पुष्ट भी करेंगे कि एक संस्था प्रधान के लिए ऐसा करना क्यों आवश्यक हो जाता है। यदि ऐसा न हो तो हम विद्यालय के नेतृत्व, चरित्र निर्माण, एवं राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना करने में कठिनाई महसूस करेंगे।

मूल्य	**कार्य जो विद्यालय में संस्था प्रधान से अपेक्षित है**	**संस्था प्रधान को जहां सोचना चाहिए**
न्याय	हर विद्यार्थी को बराबर अवसर प्रदान करना	1-इन मूल्यों के विकास, मज़बूती के लिए किए जाने वाले अन्य वैकल्पिक कार्य क्या हों सकते हैं ? 2-ये मूल्य केवल किताबों तक सीमित नहीं हों, बल्कि विद्यालय की संस्कृति में आत्मसात होने चाहिए। इसके लिए हमें प्रमुखता से कौनसे कार्य करने चाहिए ? करणीय कार्यों को सूचीबद्ध करें।
स्वतंत्रता	सीखने/प्रश्न पूछने की आज़ादी	
समानता	बिना भेदभाव सभी के साथ समान व्यवहार	
बंधुत्व	विद्यालय में भाईचारे और सहयोग का वातावरण	

सन्दर्भ व्यक्ति द्वारा संस्था प्रधानों को सोचने के लिए यहाँ एक और सवाल दिए जाएगा, जिन पर वो अपने विद्यालय को संदर्भित करते हुए सोच सकते हैं-

1. कैसे देश के विभिन्न राज्यों के संस्था प्रधानों ने अपने विद्यालयों में बाल संसद/प्रात:कालीन सभा/स्वच्छ भारत अभियान/मिड डे मील को बेहद सफल बनाते हुए इन मूल्यों को विकसित करने की एक संस्कृति बनाई होगी?

न्याय	यदि कोई विद्यार्थी कमजोर है तो संस्था प्रधान यह सुनिश्चित करें कि उसे अतिरिक्त अभ्यास के अवसर मिले। इसके लिए सहानुभूति/समानुभूतिपूर्ण संवाद शिक्षक/विद्यार्थियों से हो तो यह प्रक्रिया ही मूल्यों को स्वत: पोषित करने लगती है।

स्वतंत्रता	सभी विद्यार्थियों को खेल, पाठ्योतर गतिविधियों, सांस्कृतिक क्रियाकलापों आदि में भाग लेने के अवसर मिलें।
समानता	शिक्षक और विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, अभिव्यक्त करने और स्कूली वातावरण में सकारात्मक प्रयोग करने का वातावरण विकसित किया जावें। समुदाय से आने वाले अभिभावकों के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार हो।
बंधुत्व	विद्यालय में उत्सव/जयंती/गतिविधियाँ इस तरह से आयोजित हों कि सभी शिक्षक/ विद्यार्थियों /समुदाय को एक-दूसरे से सहभागिता का अवसर मिल सके।

चिन्तन हेतु प्रश्न:- संस्था प्रधान अपने नेतृत्व से कौन-से ऐसे तीन कार्य कर सकते हैं जिससे विद्यालय की संस्कृति में मूल्य जीवित हों? (यहाँ संस्था प्रधान सोच समझकर अपने विद्यालय के संदर्भों में इसे बनाएं, लागू करने की तरफ आगे जाएँ)

समेकन:- संस्था प्रधानों की भूमिका केवल विद्यालय संचालन या नियम लागू करने की नहीं हैं बल्कि आदर्श प्रतिरूप में कार्यों के क्रियान्वयन, निर्णय करने और व्यवहार से विद्यालय की संस्कृति तो संवर्धित करने की होती है। वे राष्ट्रीय नेतृत्व के संवाहक, चरित्र निर्माण के प्रेरक और संवैधनिक मूल्यों के संरक्षक होते हैं।

न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे मूल्य उनके नेतृत्व के जरिये विद्यालयी संस्कृति में समाहित होते हैं एवं वे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देते हैं। इसलिए इन पर विद्यालय में शिक्षकों/विद्यार्थियों से सतत एवं सार्थक संवाद भी होना चाहिए। इसके लिए महत्वपूर्ण बिन्दुओं को भी साझा किया जाएगा।

राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना में संस्था प्रधानों की भूमिका

संस्था प्रधान (Principal/Head) से अपेक्षाएँ	शिक्षकों से अपेक्षाएँ
• प्रभावी नेतृत्व: विद्यालय को केवल पढ़ाई का स्थान न मानकर, चरित्र निर्माण और मूल्यों का केंद्र बनाना, ऐसे प्रयास हों • विद्यालय संस्कृति (School Culture) विकसित करना जहाँ समानता, सम्मान, दया, करुणा, सहयोग और सेवा-भाव वातावरण का एकीकृत हिस्सा हों • शिक्षकों को सक्षम बनाना: उन्हें स्वायत्तता, सहयोग और प्रेरणा देना ताकि वे विद्यार्थियों में नैतिक और संवैधानिक मूल्यों को समाविष्ट कर सकें। • समुदाय और अभिभावकों की भागीदारी सुनिश्चित करना, जिससे विद्यालय समाज के मूल्यों से जुड़ा रहे और विद्यार्थी उदाहरण से सीखें। • ईमानदारी, पारदर्शिता, करुणा और न्यायप्रियता के व्यक्तिगत आचरण से विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए प्रेरणा बनना (Role Model) • विद्यालय की सामूहिक जिम्मेदारी: यह मानना कि प्रत्येक शिक्षक, चाहे किसी भी विषय का हो, राष्ट्रीय चरित्र और मूल्य निर्माण में सहभागी है।	• केवल विषय ज्ञान नहीं, बल्कि शिक्षण अभ्यासों में विभिन्न समुदायों एवं सांस्कृतिक परिवेश से आए विद्यार्थियों के साथ करुणा, सत्यनिष्ठा, सहयोग, दायित्व बोध को एकीकृत करना सिखाना। • संवैधानिक मूल्यों पर आधारित गतिविधियों का शिक्षण में समायोजन करना। • विद्यार्थियों के साथ समानता और सम्मानपूर्ण व्यवहार करना करते हुये जाति, लिंग, धर्म, पृष्ठभूमि पर कोई भेदभाव नहीं करना। • समय-समय पर आत्ममूल्यांकन करना कि विद्यार्थियों में कौन-से मूल्य विकसित हो रहे हैं और किन पर और काम करने की आवश्यकता है । • पाठों में निहित मूल्यों पर पर ध्यान दिलाना और विद्यार्थियों के अनुभवों को जोड़ना।

सत्र – 8 विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्य एवं चरित्र निर्माण: हितधारकों के साथ समन्वय

समय 90 मिनट

अवधारणा:

विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं है बल्कि यह राष्ट्र के भावी नागरिकों के चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय मूल्यों के विकास की प्रयोगशाला भी है। विद्यालय संस्कृति (School Culture) तभी सशक्त हो सकती है जब इसमें जुड़े सभी हितधारक (Stakeholders)- विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, प्रबंधक, स्थानीय समुदाय एवं प्रशासन मिलकर कार्य करें। विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्य एवं चरित्र निर्माण की अवधारणा इस बात पर आधारित है कि विद्यालय केवल शैक्षणिक उपलब्धियों का केंद्र न होकर, विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय विकास का भी केंद्र बने।

1. **विद्यालय संस्कृति की भूमिका:-** विद्यालय का वातावरण (प्रार्थना सभा, सहपाठ्य गतिविधियाँ, अनुशासन, आपसी संबंध) ही विद्यार्थियों को मूल्य सीखने का अवसर देता है। यह संस्कृति विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, आचरण और सोच को आकार देती है।
2. **राष्ट्रीय मूल्यों की अवधारणा:-** राष्ट्रीय मूल्य वे सिद्धांत और आदर्श हैं जो हमारे देश की संस्कृति, इतिहास और परंपरा से जुड़े हुए हैं। ये मूल्य हमें बताते हैं कि हमें कैसे जीना चाहिए, कैसे दूसरों के साथ व्यवहार करना चाहिए और कैसे देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।
3. **चरित्र निर्माण की अवधारणा:-** चरित्र का अर्थ है – व्यक्ति के भीतर विकसित नैतिकता, ईमानदारी, जिम्मेदारी और आत्मनियंत्रण। विद्यालय विद्यार्थियों को न केवल अच्छे विद्यार्थी बल्कि सद्गुणी और उत्तरदायी नागरिक बनाने का माध्यम है।
4. **हितधारकों के समन्वय की अवधारणा:-** शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय प्रबंधन, समुदाय और शासन – सभी को मिलकर कार्य करना चाहिए। यह सामूहिक प्रयास विद्यार्थियों में स्थायी मूल्य और आदर्श स्थापित करता है। इन मूल्यों को अपनाकर, हम एक समग्र रूप से मजबूत और समृद्ध देश बना सकते हैं।

उद्देश्य:

1. राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र के विकास के संबंध में अपनी समझ विकसित कर सकेंगे।
2. हितधारकों की भागीदारी से विद्यालय विकास में सहयोग बढ़ाने हेतु समझ विकसित कर सकेंगे।
3. व्यक्तित्व विकास के कौशल समझ सकेंगे।
4. सक्रिय नागरिकता के महत्व को समझ सकेंगे।

आवश्यक सामग्री:

- पीपीटी, प्रोजेक्टर, व्हाइट बोर्ड, मार्कर, इंटरनेट, चार्ट, स्केल, कलर आदि

गतिविधि

चरण-1 आइस-ब्रेकिंग / परिचय गतिविधि

"**मेरा एक मूल्य – मेरी पहचान**": प्रत्येक संभागी अपना नाम बताकर एक ऐसा मूल्य साझा करे जिसे वे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण मानते हैं। संदर्भ व्यक्ति मूल्यों की सूची बनाते हुए बोर्ड पर लिखेंगे। अंत मे शेष मूल्यों पर चर्चा करते हुए गतिविधि का समापन करेंगे।

चरण-2 संकल्प-पत्र गतिविधि (Pledge Wall / Resolution Activity)

विद्यालय में एक "संकल्प दीवार" बनाई जाए। विद्यार्थी , शिक्षक और अभिभावक उस पर अपने संकल्प लिखें – जैसे

"मैं ईमानदारी से कार्य करूंगा"

"मैं पर्यावरण संरक्षण में योगदान दूँगा"

"मैं विद्यालय से जुड़े सभी हितधारकों से समन्वय स्थापित करने हेतु प्रयास करूंगा" आदि

उक्त प्रकार के संकल्प -प्रशिक्षण में भाग ले रहे सभी संभागियों से भी लिखवाए जाएँ।

गतिविधि उपरांत सन्दर्भ व्यक्ति संकल्प दीवार पर लिखे हुए संकल्पों को विभिन्न हितधारकों द्वारा अपनाये जाने की कार्ययोजना तैयार कराएँ तथा व्यवहारगत परिवर्तनों तक लगातार कार्य करते रहें।

"विद्यालय समाज के लिए और समाज विद्यालय के लिए" की भावना को आत्मसात करने के लिए समस्त स्टाफ एवं अभिवावकों के बीच इस प्रकार का संकल्प लिया जाए कि न्यूनतम "एक अभिभावक एक स्टाफ सदस्य के साथ" तथा "एक स्टाफ सदस्य एक अभिभावक के साथ" आवश्यक रूप से संपर्क/समन्वय करते रहें। इस प्रकार की परम्परा प्रारंभ की जाए।

चरण-3 ग्रुप गतिविधि:

सर्वप्रथम संभागियों को 5 समूहों में विभाजित करें। प्रत्येक ग्रुप को विद्यालय में हितधारकों के साथ कैसे-कैसे समन्वय किया जा सकता है, कि इस सम्बन्ध में कार्य करने के निर्देश दिया जाए। विभिन्न हितधारक –

- विद्यार्थी,
- शिक्षक, संस्थाप्रधान
- अभिभावक,
- स्थानीय समुदाय
- जन प्रतिनिधि
- प्रशासन

अन्य सहयोगी संस्थाए

से सम्बन्धित परिशिष्ट पढ़ने को दिया जाए। इस हेतु सभी को 10 मिनट का समय दिया जाए उसके उपरांत सन्दर्भ व्यक्ति प्रत्येक ग्रुप को बारी-बारी से प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित करे।

चिंतन के प्रश्न:

1. विभिन्न हितधारकों को जोड़ने के लिए कौन कौन सी गतिविधियाँ की जा सकती है, लिखिए।
2. ऐसे हितधारकों की सूची बनाइये जिन्होंने आपकी शैक्षिक प्रगति में सहायता की हो।
3. कुछ ऐसे व्यक्तियों के नाम लिखिए जिनके साथ समय बिताना आपको अच्छा लगता है।
4. ऐसे 5 लोगों के नाम बताइए जिन्होंने आपको कुछ सार्थक सिखाया/समझाया हो।
5. कुछ ऐसे लोगों के बारे में सोचिये जिन्होंने आपको विशेष महसूस कराया हो।

शिक्षा के माध्यम से जीवन में बहुत सारे बदलावों की अपेक्षा की जाती है जिसमें योग्यता, पैसा, पुरस्कृत लोग ही नहीं होते बल्कि वे हितधारक भी होते हैं जो आपकी परवाह/सहायता करते हैं, जिनके कार्यों के फलस्वरूप हम सभी के जीवन में बदलाव आता है। विद्यालय में हितधारकों के साथ समन्वय के महत्व के सम्बंध में संदर्भ व्यक्ति चर्चा करते हुए गतिविधि का समेकन करें।

सन्दर्भ व्यक्ति उक्त गतिविधियों को किये जाने हेतु
निम्न संदर्भ सामग्री का उपयोग कर सकता है-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुसार विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि वह **राष्ट्रीय मूल्यों, नैतिकता और चरित्र निर्माण** का भी केंद्र है। इसके लिए विद्यालय संस्कृति (School Culture) को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि सभी हितधारक (stakeholders) – शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, प्रबंधक, स्थानीय समुदाय एवं शासन – एक साझा जिम्मेदारी निभाएँ।

1. विद्यालय संस्कृति (School Culture) का अर्थ:

विद्यालय संस्कृति केवल भौतिक वातावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें विद्यालय का वातावरण, व्यवहार, परंपराएँ, अनुशासन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, गतिविधियाँ और सभी हितधारकों की सोच शामिल होती है।

NEP 2020 के अनुसार विद्यालय संस्कृति को ऐसा होना चाहिए कि वह **समावेशी (inclusive), मूल्य-आधारित (Value-based) और राष्ट्र निर्माण केंद्रित (Nation-building oriented)** हो।

2. विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्य:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इस बात पर बल देती है कि विद्यार्थियों में केवल शैक्षणिक दक्षता ही नहीं बल्कि **संवैधानिक मूल्य** और **भारतीयता की भावना** भी विकसित हो। इसमें मुख्य राष्ट्रीय मूल्य हैं:

(क) संवैधानिक मूल्य

- **न्याय (Justice)** – सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक
- **स्वतंत्रता (Liberty)** – विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास और पूजा की स्वतंत्रता
- **समानता (Equality)** – अवसर और अधिकारों की समानता
- **बंधुता (Fraternity)** – भाईचारा, एकता और अखंडता

(ख) नैतिक मूल्य

- ईमानदारी और सत्यनिष्ठा
- कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन
- करुणा और सहानुभूति
- जिम्मेदारी और सहयोग

(ग) सांस्कृतिक मूल्य

- भारतीय कला, संगीत, साहित्य, भाषा और परंपराओं का संरक्षण
- स्थानीय और वैश्विक संस्कृति का सम्मान
- "वसुधैव कुटुंबकम्" की भावना

(घ) वैश्विक नागरिकता मूल्य

- शांति और अहिंसा
- पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास
- मानवाधिकारों का सम्मान
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग और सह-अस्तित्व

3. विद्यालय में चरित्र निर्माण

NEP 2020 के अनुसार शिक्षा केवल रोजगार के लिए नहीं, बल्कि **जीवन के लिए शिक्षा** (Education for Life) है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों का **समग्र विकास (Holistic Development)** करना है।

चरित्र निर्माण के आयाम:

- **व्यक्तिगत गुण** ⟶ आत्म-अनुशासन, आत्मविश्वास, सत्यनिष्ठा, धैर्य
- **सामाजिक गुण** ⟶ सहयोग, नेतृत्व, सहिष्णुता, विविधता में एकता
- **नागरिक गुण** ⟶ राष्ट्रभक्ति, सामाजिक उत्तरदायित्व, कर्तव्यबोध
- **जीवन कौशल** ⟶ समस्या समाधान, निर्णय क्षमता, संवाद कौशल, रचनात्मकता

4. हितधारकों के साथ समन्वय

विद्यालय संस्कृति को मजबूत बनाने और राष्ट्रीय मूल्यों व चरित्र निर्माण को सफल करने के लिए विभिन्न हितधारकों का योगदान आवश्यक है।

(क) शिक्षक

- कक्षा में **मूल्य आधारित शिक्षा** (value-based education) का समावेश
- अपने व्यवहार और आचरण से **आदर्श प्रस्तुत करना**
- विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अनुशासन और नेतृत्व को बढ़ावा देना

(ख) विद्यार्थी

- विद्यालय के नियमों का पालन करना
- सहपाठियों के साथ सहयोग और सम्मान का भाव रखना
- विद्यालय की सामाजिक, सांस्कृतिक व पर्यावरणीय गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी

(ग) अभिभावक

- घर में मूल्यनिष्ठ वातावरण बनाना
- विद्यालय और शिक्षक के साथ निरंतर संवाद बनाए रखना
- विद्यार्थियों को केवल अंक और करियर के लिए नहीं, बल्कि संस्कार और चरित्र निर्माण की दिशा में प्रेरित करना

(घ) विद्यालय प्रबंधन व प्रधानाचार्य

- विद्यालय में सकारात्मक और पारदर्शी वातावरण बनाना
- पाठ्योतर गतिविधियों को बढ़ावा देना (सांस्कृतिक, खेल, सामाजिक सेवा)
- शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए सहयोगी वातावरण तैयार करना

(ङ) स्थानीय समुदाय

- विद्यालय की गतिविधियों में सहयोग (जैसे- वृक्षारोपण, सांस्कृतिक उत्सव, स्वच्छता अभियान)
- स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को विद्यालय तक पहुँचाना
- विद्यार्थियों को सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा देना

(च) शासन और नीति-निर्माता

- शिक्षा के लिए पर्याप्त संसाधन और अवसंरचना उपलब्ध कराना
- शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता विकास कार्यक्रम
- विद्यालयों में नवाचार और अनुसंधान को बढ़ावा देना

विद्यालय हितधारकों को विद्यालय के साथ जोड़ने के लिए गतिविधियाँ:

अभिभावकों के लिए:

1. **अभिभावक-शिक्षक बैठक:** नियमित बैठकें आयोजित करके अभिभावकों को विद्यालय की समस्त गतिविधियों से अवगत कराएं।
2. **अभिभावक-शिक्षक संवाद:** अभिभावकों और शिक्षकों के बीच संवाद को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियां व कार्यक्रम आयोजित करें।
3. **अभिभावक स्वयंसेवक कार्यक्रम**: अभिभावकों को विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में स्वयंसेवक के रूप में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें।

स्थानीय समुदाय के लिए:

1. समुदाय-विद्यालय कार्यक्रम: स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित करें, जैसे - स्वास्थ्य शिविर, पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम आदि।
2. स्थानीय संसाधनों का उपयोग: स्थानीय संसाधनों का उपयोग करके विद्यालय की गतिविधियों को बढ़ावा दें।
3. समुदाय के साथ संवाद: स्थानीय समुदाय के साथ संवाद को बढ़ावा देने के लिए गतिवधियाँ कार्यक्रम आयोजित करें।

विद्यार्थियों के लिए:

1. विद्यार्थी परिषद का गठन करके विद्यार्थियों को विद्यालय के निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करें।
2. विद्यार्थी नेतृत्व कार्यक्रम: विद्यार्थियों को नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिए बाल संसद का गठन व कार्यक्रम आयोजित करें।
3. विद्यार्थी अभिव्यक्ति: विद्यार्थियों को अपनी बात कहने और अभिव्यक्ति करने के लिए अवसर प्रदान करें।
4. सभी विद्यार्थी हमारी प्राथमिकता में रहे उनकी रुचि को प्रोत्साहित किया जाएं।

अन्य हितधारकों के लिए:

स्थानीय व्यवसायियों के साथ साझेदारी: स्थानीय व्यवसायियों को प्रोत्साहित करते हुए एवं उनके साथ साझेदारी करके विद्यालय की गतिविधियों को बढ़ावा दें।

1. **गैर सरकारी संस्थाओं के साथ साझेदारी:** संस्थाओं के साथ साझेदारी करके विद्यालय में प्रेरणादायी गतिविधियों को बढ़ावा दें। विभिन्न विषयों पर जागरूकता सत्र आयोजित हों।
2. **सरकारी एजेंसियों के साथ संवाद:** सरकारी एजेंसियों के साथ संवाद को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रम आयोजित करें।

इन गतिविधियों के माध्यम से, विद्यालय अपनी हितधारकों को विद्यालय के साथ जोड़ सकता है और उनके साथ मजबूत संबंध बना सकता है।

समेकन:

विद्यालय संस्कृति में राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र निर्माण की प्रक्रिया तभी सफल हो सकती है जब विद्यालय से जुड़े सभी **हितधारक (Stakeholders)** जैसे -विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, प्रबंध समिति, स्थानीय समुदाय एवं प्रशासन आपसी **सहयोग और समन्वय** से कार्य करें।

- **शिक्षक** ज्ञान व मूल्यों के संवाहक बनते हैं।
- **विद्यार्थी** इन मूल्यों को आत्मसात कर अपने व्यवहार में लाते हैं।
- **अभिभावक** घर-परिवार में नैतिक वातावरण का पोषण करते हैं।
- **समाज व समुदाय** विद्यार्थियों के लिए आदर्श परिस्थितियाँ एवं प्रेरणास्पद वातावरण निर्मित करता है।
- **प्रशासन व नीति-निर्माता** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (जैसे NEP 2020) के अनुरूप संसाधन और दिशा प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, सभी हितधारकों के एकीकृत का सामूहिक प्रयास विद्यालय को विषयगत शिक्षा का केंद्र बनाकर, **चरित्र निर्माण और राष्ट्रीय मूल्यों की संवाहक संस्था** में बदल देता है।

संक्षेप में कहा जाए —**"हितधारकों का समन्वित प्रयास ही विद्यालय संस्कृति को राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र निर्माण का जीवंत आधार बनाता है।"**

सत्र 9- विद्यालय के सन्दर्भ में राष्ट्रीय मूल्यों एवं चरित्र के विकास में चुनौतियाँ

समय -90 मिनट

प्रस्तावना :

"अब्राहम लिंकन ने अपने बेटे के शिक्षक को पत्र लिखते हुए कहा था — ***'मेरे बेटे को यह सिखाइए कि जीतने से कहीं अधिक महत्व इस बात का है कि वह ईमानदारी और साहस से हारना सीखे। उसे यह समझाइए कि अंक और उपलब्धियाँ ही सब कुछ नहीं हैं, बल्कि सच्चाई, मेहनत और दूसरों के प्रति सम्मान ही जीवन का असली मूल्य हैं।'***

यह पत्र हमें याद दिलाता है कि विद्यालय शिक्षा का काम केवल पढ़ाई-लिखाई कराना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में अच्छा चरित्र, सही मूल्य और नेतृत्व की भावना जगाना भी है। लेकिन व्यवहार में हमें कई चुनौतियाँ दिखाई देती हैं।

आज शिक्षा ज़्यादातर परीक्षा और अंकों तक सीमित हो गई है। मूल्य परख शिक्षा को अक्सर अतिरिक्त समझा जाता है। प्रार्थना सभा या राष्ट्रीय पर्व भी केवल औपचारिकता बनकर रह जाते हैं। विद्यार्थी सोशल मीडिया और त्वरित सुख की आदतों से प्रभावित हो रहे हैं और अभिभावक भी ज़्यादातर अंकों, परीक्षा और नौकरी की चिंता तक सीमित रहते हैं।

इन परिस्थितियों में हमारी जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। हमें शिक्षा को केवल परीक्षा तक नहीं रोकना है, बल्कि इसे ऐसा अनुभव बनाना है जो विद्यार्थियों को अच्छा इंसान, जिम्मेदार नागरिक और मूल्यों से जुड़ा हुआ इंसान बनाए। जैसा महात्मा गाँधी जी ने कहा है —

"शिक्षा का सच्चा उद्देश्य केवल बुद्धि को विकसित करना नहीं, बल्कि चरित्र को गढ़ना है।"

उद्देश्य:

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) की दृष्टि से राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय मूल्यों की भूमिका को समझाना।
- शिक्षा को केवल शैक्षणिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर मूल्यों व चरित्र निर्माण से जोड़ने के उपेक्षित कौशलों को समझना।
- विद्यालय में मूल्यों एवं चरित्र विकास की चुनौतियों एवं समाधान के तरीके समझना।
- संस्था प्रधान के नेतृत्व में मूल्य आधारित वातावरण के निर्माण की आवश्यकता की समझ विकसित करना।
- विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता और नेतृत्व के कौशल समझना।
- विद्यालय में मूल्य-आधारित पहल और नवाचार विकसित करने की प्रक्रिया समझना |

आवश्यक सामग्री : 5 केस स्टडी की 4-4 फोटोप्रति, 20 रिमपेपर।

गतिविधि 1.

"अब्राहम लिंकन ने अपने बेटे के शिक्षक को पत्र लिखते हुए कहा था — ***'मेरे बेटे को यह सिखाइए कि जीतने से कहीं अधिक महत्व इस बात का है कि वह ईमानदारी और साहस से हारना सीखे। उसे यह समझाइए कि अंक और उपलब्धियाँ ही सब कुछ नहीं हैं, बल्कि सच्चाई, मेहनत और दूसरों के प्रति सम्मान ही जीवन का असली मूल्य हैं।'*** *(पत्र की प्रति पढ़ाने को दें।)*

पत्र हमें याद दिलाता है कि विद्यालय शिक्षा का काम केवल पढ़ाई-लिखाई कराना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में अच्छा चरित्र, सही मूल्य और नेतृत्व की भावना जगाना भी है। लेकिन व्यवहार में हमें कई चुनौतियाँ दिखाई देती हैं।

अब्राहम लिंकन द्वारा लिखे पत्र की अपेक्षाओं के अनुरूप शैक्षिक व्यवहार में क्या क्या चुनौतियां है ?

समूह से मिले उत्तरों के मुख्य बिन्दुओं को बोर्ड पर दर्ज कर लें यह प्रयास करें कि इन चुनौतियों का संभागियों की मदद लेते हुए वर्गीकरण क्या जाएँ।

वर्गीकरण के आधार -

परीक्षा में अंक प्राप्त करने पर ज़ोर,
सहयोग की जगह अस्वस्थ प्रतिस्पर्धा हावी,
प्रात:कालीन सभा और राष्ट्रीय पर्व,
सोशल मीडिया का प्रभाव, एवं जिम्मेदार उपयोग
घर-विद्यालय का विरोधाभास हो सकते है |

नकारात्मक समूह प्रभाव

गतिविधि 2.

प्रथम चरण - पूरे समूह को 10 उप-समूहों में विभाजित करें और उनको उप-समूहों में बैठा कर 2 उप-समूहों को एक एक केस स्टडी पढ़ने व उसमें लिखें प्रश्नो के उत्तर विचार विमर्श के साथ पेपर पर लिखने के लिए कहें।

यदि समूह के किसी साथी की अलग राय हो तो वह भी दर्ज की जाये। इस कार्य के लिए शुरुआत में 15 मिनिट का समय दिया जा सकता है, जरूरत होने पर समय बढ़ाया जा सकता है।

द्वितीय चरण- उपरोक्त कार्य को करने के पश्चात् संदर्भ व्यक्ति उप-समूहों को प्रस्तुतीकरण तैयार करने को कहें जिसमें वे निम्न चरणों को शामिल करें।

- **चरण 1:** समस्या पहचानें (यहाँ मुख्य चुनौती क्या है?)
- **चरण 2:** संभावित कारण बताएं (ऐसा क्यों हुआ?)
- **चरण 3:** समाधान सोचें (शिक्षक/विद्यालय/माता-पिता/विद्यार्थी क्या कर सकते हैं?)
- **चरण 4:** मूल्यों से जोड़ें (कौन-से मूल्य कमजोर/मजबूत हो रहे हैं?)

तृतीय चरण- सभी उप-समूहों में कार्य होने के पश्चात् पूरे समूह के समकक्ष प्रस्तुतीकरण करवाएँ। जब समूह के सदस्य प्रस्तुत कर रहे हों तो मुख्य बिन्दुओं को संदर्भ व्यक्ति बोर्ड पर नोट करते रहें। सभी केस स्टडी पर इसी तरीके से काम किया जाए।

समेकन - संदर्भ व्यक्ति सभी केस स्टडी वार संभागियों से प्रमुख बातें साझा करें जो निम्न हो सकती हैं-

केस स्टडी 1 परीक्षा में अंक प्राप्त करने पर ज़ोर

- यह परिस्थिति परीक्षोन्मुखी शिक्षा की ओर इशारा करती है, जिसमें मूल्य परख शिक्षा को नज़रअंदाज़ किया जाता है।
- विद्यार्थियों को यह समझाना जरूरी है कि ईमानदारी, सहयोग, जिम्मेदारी जैसे मूल्य जीवन और परीक्षा दोनों में जरूरी है।
- अच्छे अंक ज़रूरी हैं, लेकिन वे चरित्र और नागरिकता की गारंटी नहीं हैं।
- एक शिक्षक को विषय पढ़ाने के साथ-साथ मूल्यों को व्यवहार और दैनिक गतिविधियों से जोड़ना चाहिए।

केस स्टडी 2 सहयोग की जगह प्रतिस्पर्धा हावी

- शिक्षक के नज़रअंदाज़ करने से कक्षा का माहौल नकारात्मक हुआ।
- शिक्षक का दायित्व केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, सम्मान और सहयोग की संस्कृति बनाना भी है।
- संवेदनशील शिक्षक छोटी घटनाओं को भी शिक्षण का अभिन्न अंग (Teachable Moments) बना देते हैं।
- शिक्षक का आचरण ही विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ा आदर्श (Role model) है।

केस स्टडी 3 प्रात:कालीन सभा और राष्ट्रीय पर्व

- औपचारिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों पर स्थायी असर नहीं डालती हैं।
- यदि विद्यार्थी अर्थ समझें और सक्रिय भाग लें तो वही गतिविधियाँ गहरे मूल्य निर्माण का साधन बन सकती हैं।
- राष्ट्रीय पर्व और प्रार्थना सभा विद्यार्थियों में देशभक्ति, एकता, जिम्मेदारी और सम्मान जगाने के अवसर हैं।
- शिक्षक और प्रधानाचार्य को इन गतिविधियों को अनुभवात्मक (experiential) बनाना चाहिए।

केस स्टडी 4 सोशल मीडिया का प्रभाव

- सोशल मीडिया विद्यार्थियों के समय, ध्यान, एकाग्रता और सोच को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है।
- सहयोग की भावना तभी बढ़ेगी जब कक्षा में साझा कार्य, खेल और समावेशी गतिविधियाँ हों।
- विविध पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों को मिलाकर कार्य कराने से समानता और आपसी समझ बढ़ती है।
- शिक्षा का मकसद केवल ज्ञान नहीं, बल्कि अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता भी है।

केस स्टडी 5 घर-विद्यालय का विरोधाभास

- माता-पिता की सोच (केवल अंक और नौकरी पर फोकस) राष्ट्रीय चरित्र और मूल्य विकास में बाधक है।
- घर और विद्यालय के मूल्यों का विरोधाभास विद्यार्थियों में भ्रम और असमंजस पैदा करता है।
- सामाजिक पूर्वाग्रह (जाति, लिंग भेद) राष्ट्रीय एकता और समावेशिता को कमजोर करते हैं।
- शिक्षक/मेंटॉर विद्यार्थियों को आलोचनात्मक सोच, सहानुभूति और सही मूल्यों से जोड़कर मदद कर सकते हैं।

संभागियों हेतु मुख्य संदेश व करणीय कार्य

शिक्षा = ज्ञान + मूल्य : केवल अच्छे अंक शिक्षा का लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि जिम्मेदार, संवेदनशील और सहयोगी नागरिक बनाना भी उतना ही आवश्यक है।

1. शिक्षक का दायित्व बहुआयामी है : शिक्षक केवल विषय नहीं पढ़ाते, बल्कि अपने आचरण, व्यवहार और कक्षा के वातावरण से विद्यार्थियों का चरित्र गढ़ते हैं।
2. विद्यालय की गतिविधियाँ औपचारिक न हों : प्रार्थना सभा, राष्ट्रीय पर्व, समूह कार्य आदि को अर्थपूर्ण और अनुभवात्मक बनाना चाहिए।
3. मूल्य शिक्षा पढ़ाई से जुड़ी है, अलग नहीं : हर विषय और गतिविधि के साथ ईमानदारी, सहयोग, सहिष्णुता जैसे मूल्यों को जोड़ा जा सकता है।
4. घर और विद्यालय दोनों की भूमिका : यदि दोनों मिलकर एक जैसे संदेश दें, तभी विद्यार्थियों में राष्ट्रीय नेतृत्व, चरित्र और मूल्य विकसित हो पाएँगे।

अंत में संदर्भ व्यक्ति संभागियों के चिंतन के लिए प्रश्न कर सकते है :

“आप अपनी कक्षा/विद्यालय में मूल्य और शिक्षा को साथ जोड़ने के लिए कौन-सा छोटा बदलाव करेंगे?”

केस स्टडी 1:

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोटड़ा में कक्षा 9 की गणित अध्यापिका सुमन जी बहुत मेहनती और समर्पित हैं। उनका मुख्य लक्ष्य है कि उनकी कक्षा के विद्यार्थी बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करें। इसी कारण वे कक्षा में अधिकतर समय प्रश्न हल करवाने, अभ्यास पत्र कराने और पिछली परीक्षाओं के प्रश्नपत्रों और महत्वपूर्ण प्रश्नों का बार-बार अभ्यास करवाने में लगाती हैं।

सुमन जी यह मानती हैं कि विद्यार्थियों के अच्छे अंक ही उनके भविष्य को सुरक्षित करेंगे। लेकिन इसी बीच विद्यालय की प्रातकालीन सभा में विद्यार्थियों से “ईमानदारी” और “सहयोग” पर बोलने को कहा गया। आश्चर्य की बात यह रही कि उनकी कक्षा के अधिकांश विद्यार्थी कुछ नहीं बोल पाए। अध्यापिका के पूछने पर राघव व रमेश ने कहा, *“मैडम, यह सब अलग बातें हैं, पढ़ाई और परीक्षा से इसका कोई संबंध नहीं है।”* शेष बच्चो ने भी सहमति जताई।

चर्चा के प्रश्न:

- यह परिस्थिति किस प्रकार की शिक्षा पर फोकस होने की बात करती नजर आ रही है?
- विद्यार्थी क्यों यह मान रहे हैं कि मूल्य शिक्षा और पढ़ाई दो अलग-अलग चीज़ें हैं?
- क्या परीक्षा और मूल्य शिक्षा को साथ-साथ जोड़ा जा सकता है?
- क्या केवल अंकों की प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों को “अच्छा नागरिक” बना सकती हैं?
- अगर आप सुमन जी की जगह होते तो अपनी कक्षा में कुछ अलग करते?

केस स्टडी 2:

एक विद्यालय में अंग्रेज़ी शिक्षक राजेश जी विद्यार्थियों को पढ़ाने में निपुण हैं। वे भाषा और साहित्य को रोचक ढंग से पढ़ाते हैं और उनके विद्यार्थी अच्छे अंक भी लाते हैं। लेकिन राजेश जी का फोकस हमेशा इसी बात पर रहता है — *"पढ़ाई में आगे रहो, अच्छे अंक लाओ, तभी आप सफल हो।"* एक दिन कक्षा में एक विद्यार्थी ने दूसरे साथी के उच्चारण पर मज़ाक उड़ाया। कक्षा में हंसी फैल गई। लेकिन राजेश जी ने इस घटना को नज़रअंदाज़ कर दिया और कहा — *"चलो-चलो, इन सब पर समय मत बर्बाद करो, पढ़ाई पर ध्यान दो।"*

धीरे-धीरे देखा गया कि कक्षा का माहौल बदलने लगा। विद्यार्थी आपसी सहयोग और सम्मान की बजाय एक-दूसरे को नीचा दिखाने और नकारात्मक प्रतिस्पर्धा करने लगे।

चर्चा के प्रश्न:

- शिक्षक के नज़रअंदाज़ करने से विद्यार्थियों के बीच क्या असर पड़ा?
- क्या शिक्षक का दायित्व केवल विषय ज्ञान तक सीमित है?
- एक संवेदनशील शिक्षक ऐसी स्थिति में क्या कर सकता है ?
- शिक्षक के आदर्श व्यवहार का विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है?

केस स्टडी 3

एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में प्रतिदिन प्रार्थना सभा होती है। विद्यार्थी पंक्तिबद्ध खड़े होते हैं, प्रार्थना करते हैं, प्रतिज्ञा दोहराते हैं और फिर अपनी-अपनी कक्षाओं में चले जाते हैं। लेकिन यह पूरी प्रक्रिया बहुत औपचारिक हो गई है। अधिकांश विद्यार्थी शब्दों का अर्थ एवं भाव जाने बिना बस शब्द दोहराते हैं। शिक्षक भी केवल व्यवस्था बनाए रखने पर बल देते हैं।

इसी प्रकार राष्ट्रीय पर्व जैसे 15 अगस्त और 26 जनवरी पर भी केवल ध्वजारोहण, भाषण और मिठाई वितरण तक ही गतिविधि सीमित रह जाती है। विद्यार्थी कार्यक्रम में शामिल तो होते हैं, लेकिन उनके लिए यह दिन सिर्फ "उत्सव और मिठाई" का पर्याय बन जाता है।

हाल ही में विद्यालय में एक शिक्षक ने विद्यार्थियों से पूछा कि प्रतिज्ञा में "हम भारतवासी अपने देश को…" का क्या अर्थ है? अधिकांश विद्यार्थी शांत रहे, कुछ ने कहा — *"मैडम, हमें तो यह रोज़ बोलना पड़ता है, पर इसका मतलब नहीं पता।"*

चर्चा के प्रश्न

1. विद्यार्थी प्रार्थना या प्रतिज्ञा का वास्तविक अर्थ क्यों नहीं समझ पाते?
2. क्या विद्यालयी गतिविधियाँ केवल औपचारिकता निभाने के लिए होनी चाहिए?
3. राष्ट्रीय पर्व विद्यार्थियों के लिए मूल्य शिक्षा का अवसर कैसे बन सकते हैं?
4. इन गतिविधियों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए आप क्या करते ?
5. विद्यार्थियों को ऐसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का अवसर देने से कौन-से मूल्य विकसित हो सकते हैं?
6. कुछ और गतिविधि सूचीबद्ध करें।

केस स्टडी 4

एक शहरी विद्यालय की कक्षा 8 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह सोशल मीडिया पर बहुत सक्रिय हैं। विद्यार्थी दिनभर वीडियो, गेम्स और चैट में व्यस्त रहते हैं। कक्षा में आते ही वे अक्सर मोबाइल पर देखी गई नई बातें या वीडियो शेयर करते हैं। जब अध्यापक उनसे पाठ पर ध्यान देने को कहते हैं, तो वे जल्दी ऊब जाते हैं और कहते हैं "ये तो बोरिंग है, इसमें मज़ा नहीं है।"

विद्यार्थी सोशल मीडिया पर आने वाले संदेशों और वीडियो को बिना समझे फॉरवर्ड कर देते हैं। इससे न केवल गलत जानकारी फैलती है, बल्कि मजाक या झूठी खबरों के कारण डर, भ्रम, नकरात्मक और कक्षा में वाद विवाद/ बहस बढ़ने लगी है।

विद्यालय में सम्पन्न परिवारों के कुछ विद्यार्थी अक्सर अपनी सुविधाओं और वैभव का प्रदर्शन करते हैं, जिससे अन्य विद्यार्थियों में हीनभावना और प्रतिस्पर्धा बढ़ती है। धीरे-धीरे कक्षा में आपसी दूरी और छोटे-छोटे समूह बनने लगे हैं।

हाल ही में विज्ञान अध्यापक ने विद्यार्थियों को प्रयोग करने हेतु समूह कार्य दिया जिसमें उन्हें इसके परिणाम भी प्रदर्शित करने थे लेकिन विद्यार्थियों ने बहस करना शुरू कर दिया कि किसे नेतृत्व करना है और किसका नाम प्रस्तुति में पहले आएगा। काम बाँटने और सहयोग करने के बजाय, अधिकांश विद्यार्थी अकेले-अकेले काम कर रहे थे। नतीजा यह हुआ कि समूह कार्य अधूरा रह गया एवं न तो प्रयोग ही पूरा हुआ और न अपेक्षित परिणाम प्राप्त हुआ।

चर्चा के प्रश्न

- विद्यार्थियों में सहयोग और सामूहिक कार्य की भावना क्यों कम होती जा रही है?
- सोशल मीडिया का विद्यार्थियों की सोच और पढ़ाई पर क्या असर पड़ रहा है?
- विविध सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों के बीच सामंजस्य कैसे बनाया जा सकता है?
- क्या शिक्षा केवल ज्ञान देना है या विद्यार्थियों को अनुशासन, सहयोग और सहिष्णुता सिखाना भी उतना ही ज़रूरी है?
- क्या आप वास्तविक जीवन में कुछ उदाहरण दे सकते हैं?
- यदि आप उस कक्षा के अध्यापक होते, तो इस स्थिति को संभालने के लिए क्या प्रयास करते?

केस स्टडी 5

अमन और प्रिया, एक मध्यम वर्गीय कामकाजी दंपत्ति अपने 15 वर्षीय बेटे आर्यन के भविष्य को लेकर बहुत महत्वाकांक्षी हैं। वे मानते हैं कि सफलता का एकमात्र सूचक अच्छे अंक और एक प्रतिष्ठित नौकरी है। आर्यन एक अच्छे स्कूल में पढ़ता है, जहाँ उसे राष्ट्रीय चरित्र, मूल्य और सामाजिक मूल्यों के बारे में भी पढ़ाया जाता है।

आर्यन की वार्षिक रिपोर्ट कार्ड में उसके गणित और विज्ञान के अंक बहुत अच्छे थे, लेकिन सामाजिक कार्य (Social Work) और सह-पाठयक्रम गतिविधियों (Co-curricular activities) में उसके ग्रेड औसत थे। अमन और प्रिया ने केवल गणित और विज्ञान के अंकों की तारीफ की और उसे सामाजिक कार्यों पर समय बर्बाद न करने की सलाह दी। उन्होंने आर्यन से कहा, "ये सब चीजें नौकरी दिलाने में मदद नहीं करतीं। तुम अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर लगाओ।"

एक दिन, आर्यन के स्कूल ने "सामुदायिक सेवा दिवस" का आयोजन किया, जिसमें विद्यार्थियों को पास के अनाथ आश्रम में जाकर विद्यार्थियों के साथ समय बिताना था। आर्यन ने उत्साह से अपने माता-पिता को इस बारे में बताया। लेकिन प्रिया ने तुरंत मना कर दिया। उन्होंने कहा, "यह सब दिखावा है। इससे बेहतर है कि तुम घर पर बैठकर अपनी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करो। ऐसे काम सिर्फ

समय की बर्बादी है।" आर्यन ने अपनी शिक्षिका से सीखा था कि दूसरों की मदद करना एक महत्वपूर्ण मूल्य है, लेकिन घर पर उसे इसके बिल्कुल विपरीत सीख मिल रही थी। यह विरोधाभास उसे भ्रमित कर रहा था।

स्कूल के एक प्रोजेक्ट के दौरान, आर्यन ने देखा कि उसकी कक्षा की कुछ लड़कियाँ एक महत्वपूर्ण समूह चर्चा में भाग लेने से कतरा रही थीं, क्योंकि कुछ लड़के लगातार उनकी बातों को काट रहे थे। जब उसने इस बारे में अपने माता-पिता से बात की, तो अमन ने कहा, "यह सब तो चलता रहता है। लड़कियों का स्वभाव ही ऐसा होता है।" इस टिप्पणी ने आर्यन को और भी उलझन में डाल दिया।

चर्चा के प्रश्न

1. आर्यन के माता-पिता की सोच राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों के विकास में कैसे बाधा बन रही है?
2. घर और विद्यालय के मूल्यों में विरोधाभास आर्यन के व्यक्तित्व को किस तरह प्रभावित कर रहा है?
3. आर्यन के पिता के विचार और सामाजिक पूर्वाग्रह (सामाजिक विभाजन) किस प्रकार राष्ट्रीय एकता और समावेशिता (inclusivity) की भावना को कमजोर कर सकते हैं?
4. एक शिक्षक या मेंटर के रूप में, आप आर्यन को इस स्थिति से निपटने में कैसे मदद करेंगे?
5. इन स्थितियों में "राष्ट्रीय नेतृत्व, राष्ट्रीय चरित्र एवं मूल्य" के विकास के लिए क्या सुझाव देंगे?

सत्र : 10 विद्यालय में बेहतर कार्य संस्कृति की स्थापना हेतु कार्यान्वयन रणनीति

समय : 90 मिनट

अवधारणा:

विद्यालय में बेहतर कार्य संस्कृति का निर्माण एक ऐसा प्रक्रिया है जो शिक्षा को केवल ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि मूल्य आधारित जीवन जीने की कला बनाता है। नई शिक्षा नीति (NEP-2020) और एनसीएफ (School Culture and Process Document) इस दिशा में स्पष्ट रूप से मार्गदर्शन देते हैं। NEP- 2020 में शिक्षा को समावेशी, सहयोगात्मक और नैतिक बनाने पर बल दिया गया है। उदाहरण स्वरूप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को न केवल विषय वस्तु में दक्ष बनाया जाता है बल्कि उन्हें एक प्रेरक, संवेदनशील और उत्तरदायी शिक्षक बनने के लिए भी सशक्त किया जाता है।

एनसीएफ दस्तावेज में भी यह स्पष्ट किया गया है कि विद्यालय में पारदर्शिता, संवाद और सहभागिता को बढ़ावा देना आवश्यक है ताकि सभी हितधारक—शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक, समुदाय और प्रशासन एक साझा जिम्मेदारी की भावना से कार्य करें। इसके साथ ही बेहतर कार्य संस्कृति में संविधान द्वारा प्रदत्त संवैधानिक मूल्य जैसे- समानता, धर्मनिरपेक्षता, न्याय और स्वतंत्रता को भी प्रमुखता दी जाती है। उदाहरण के लिए विद्यालय परिवेश में-

- समानता एवं समता की भावना आचार विचार एवं व्यवहार में परिलक्षित होती हो।
- दूसरों के विचारों के प्रति सम्मान रखते हुए अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने हेतु उपयुक्त वातावरण सृजन करना।
- विद्यालय में सभी नियम निष्पक्ष रूप से लागू हों एवं सभी का एक दूसरे के प्रति व्यवहार आत्मीय एवं न्यायसंगत हो।

यह सत्र विद्यालय की सकारात्मक कार्य-संस्कृति, शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार और सामाजिक समरसता की स्थापना पर केंद्रित होगा। व्यावहारिक उदाहरणों के माध्यम से हम यह जानेंगे कि मूल्य-आधारित शिक्षा को कैसे प्रभावी ढंग से व्यवहार में उतारा जा सकता है।

उद्देश्य—

1. बेहतर कार्य संस्कृति के मायने एवं प्रक्रियाओं को समझ सकेंगे।
2. विद्यालय स्तर पर बेहतर संस्कृति विकसित करने की रणनीतियों, घटकों के क्रियान्वयन के कौशल समझ सकेंगे।

गतिविधि

चरण-1

- गतिविधि के इस चरण में हम एक केस स्टडी के जरिए रेखांकित करने का प्रयास करेंगे कि-
- बेहतर कार्य संस्कृति किस तरह से विकसित होती है?
- बेहतर कार्य संस्कृति एक साझा प्रयास होती है जहां विभिन्न हितधारक यथा विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक आदि परस्पर समन्वय रखते हुए साझी समझ विकसित करते हैं।

प्रक्रिया— सन्दर्भ व्यक्ति नीचे दी गई केस स्टडी संभागियों को पढ़ने के लिए दें एवं उसके बाद नीचे दिये गये प्रश्नों पर केस—स्टडी को आधार बनाकर उनके अनुभवों को जानने का प्रयास करें।

चर्चा के प्रश्न—

1- केस स्टडी में पढ़ने-लिखने की संस्कृति विकसित करने के लिए किन-किन पहलुओं पर ध्यान दिया गया? चर्चा करें
यदि आप अपने विद्यालय में एक बेहतर संस्कृति बनाना चाहते, तो सबसे पहले आप कौन-से पहलुओ पर ध्यान केन्द्रित करेंगे और क्यों?
2- विद्यालय में बेहतर कार्य संस्कृति के विचार को स्थापित करने में विद्यार्थियों की राय और सहभागिता कितनी महत्वपूर्ण होती है और क्यों?
3- केस स्टडी में विद्यार्थियों द्वारा कौन -कौन से सुझाव दिए गये है? सूचीबद्ध कीजिये, विद्यार्थियों के सुझाव किस प्रकार महत्वपूर्ण है? चर्चा करें
4- परिवेशीय अनुभवों के आधार पर कौन-कौन से बिन्दुओं को बेहतर कार्य संस्कृति के लिए सम्मलित किया जाना चाहिए?

स्कूल के प्रधानाचार्य श्री अमित वर्मा ने यह सोचा कि स्कूल में पढ़ने-लिखने की संस्कृति को विकसित करना है। उन्होने महसूस किया कि विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों के अलावा भी किताबें पढ़ें एवं पुस्तको के पढ़ने के प्रति उनमें रूचि जागृत हो। इस विचार को मूर्त रूप देने के लिए उन्होने अपने विद्यालय की पूरी टीम से संवाद किया, कुछ ऐसे प्रश्न भी आये थे कि विद्यालय समय सारणी में अतिरिक्त समय पढ़ने के लिए कैसे निकलेगा? पाठ्यक्रम पूरा नहीं होगा आदि। प्रधानाचार्य ने इन सभी प्रश्नों पर अपनी राय भी व्यक्त की थी। शिक्षकों ने प्रेरित होकर विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। हर सोमवार एक 'पढ़ने का उत्सव' आयोजित किया जाने लगा, जहाँ विद्यार्थी अपनी पसंदीदा किताब के बारे में पूरी कक्षा के सामने बताते। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास और पढ़ने की आदत दोनों विकसित हुई। एक समय बाद विद्यार्थियों ने भी अपनी बात रखी कि पढ़ने का उत्सव तो प्रतिदिन होना चाहिए। विद्यार्थियों की इस राय पर पूरी टीम ने विचार किया। उसके बाद शिक्षकों ने रचनात्मक तरीके अपनाए – विद्यार्थियों से कहानी लिखवाना, उनके विचार साझा करवाना, समूह में चर्चा कराना। इससे विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ा और वे सीखने के प्रति ज्यादा सक्रिय हो गए। वे अपनी पढ़ी हुई रचना को अब दीवार पर एक पत्रिका के रूप में प्रदर्शित करने लगे थे, समुदाय से भी वहां अभिभावक विजिट करते एवं इन सभी प्रयासों का अवलोकन होने लगा।

प्रत्येक महीने विद्यार्थियों के पठन—लेखन प्रस्तुति कार्यक्रम भी आयोजित होने लगे। जहाँ विद्यार्थी अपनी परियोजनाएं/प्रोजेक्ट वर्क और पुस्तकों पर आधारित के साथ प्रस्तुतीकरण देते। इस तरह विद्यार्थियों ने खुद अपनी समझ को शब्दों में व्यक्त करना सीखा।

अभिभावकों को भी प्रेरित किया गया कि वे विद्यार्थियों से प्रतिदिन कम से कम 15 मिनट एक साथ पढ़ें और पढ़ी गई बातों पर चर्चा करें। इससे घर-विद्यालय दोनों में साझी जिम्मेदारी का वातावरण बना।

समय के साथ, स्कूल में प्रत्येक विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से पढ़ने-लिखने की आदत अपनाने लगा। वे अपने विचारों को साझा करने में सहज हो गए। विद्यालय पठन संस्कृति को फलीभूत करने की दिशा में बढ़ने लगा।

समेकन:

चरण एक: (*सन्दर्भ व्यक्ति पूरी चर्चा को नीचे दिये गये* ***चरण एक*** *के समेकन को ध्यान में रखकर समेकित करें।*)

विद्यालय में **साझी संस्कृति** का निर्माण एक सुविचारित और सामूहिक प्रयास होता है। संस्कृति का अर्थ है – **साझा आदतें, विश्वास, मूल्य और व्यवहार**, जो एक समूह के सभी सदस्य मिलकर समय के साथ विकसित करते हैं। यह कभी भी किसी एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं होती, बल्कि शिक्षकों, प्रधानाचार्य, विद्यार्थी और अभिभावकों की संयुक्त सोच, सहयोग और सक्रिय भागीदारी का परिणाम होती है।

नई शिक्षा नीति (NEP-2020) इस बात पर बल देती है कि विद्यालय को एक ऐसा सकारात्मक, समावेशी और रचनात्मक वातावरण बनाना चाहिए, जहाँ विद्यार्थी केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित न होकर अनुभव, संवाद, परियोजना आधारित कार्य और आत्म-अभिव्यक्ति के माध्यम से सीखें।

केस स्टडी में हमने देखा कि कैसे प्रधानाचार्य अमित वर्मा ने स्पष्ट दृष्टि से विद्यालय में पठन-संस्कृति को विकसित करने का लक्ष्य रखा। उन्होंने शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किताबें पढ़ें और उन पर चर्चा करें। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को कहानी लिखने, विचार साझा करने और समूह चर्चा में भाग लेने के अवसर दिए।अभिभावकों को भी सक्रिय रूप से शामिल किया गया ताकि वे अपने विद्यार्थियों के साथ पढ़ने और समझने में सहयोग करें। महत्वपूर्ण बात यह रही कि विद्यार्थियों की राय को भी समान महत्व दिया गया, उन्होंने इच्छा व्यक्त की, कि पढ़ने का उत्सव नियमित रूप से आयोजित हो। इस विचार पर पूरी टीम ने ध्यान देकर उसे अमल में लाया। इन सामूहिक प्रयासों से धीरे-धीरे विद्यालय में एक सकारात्मक पठन-संस्कृति का विकास हुआ। आज विद्यालय का हर बच्चा स्वाभाविक रूप से पढ़ने-लिखने में रुचि लेने लगा है,आत्मविश्वास से भरपूर है और अपने विचार सहजता से व्यक्त करता है। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि जब सब मिलकर साझा उद्देश्य की दिशा में काम करते हैं, तो स्थायी और स्वस्थ शिक्षा संस्कृति बनती है।

चरण दो— विद्यालय स्तर पर बेहतर संस्कृति विकसित करने के लिए रणनीतियां

सन्दर्भ व्यक्ति नीचे दिये गये 7 घटकों को पढ़ ले एवं आगे दी गई गतिविधि को इन बिन्दुओं के आधार पर समेकित करें एवं विद्यालय स्तर पर बेहतर संस्कृति को सुनिश्चित करने के लिए इन घटकों पर कार्य करने की उपयोगिता को रेखांकित करें।

References: NCF school culture process chapter and NEP

विद्यालय में एक समृद्ध और सकारात्मक कार्य-संस्कृति का निर्माण, अकादमिक उपलब्धि के साथ-साथ समग्र व्यक्तित्व विकास, संवैधानिक मूल्यों का व्यवहारिक समावेश और सामाजिक जिम्मेदारी के निर्माण की अद्भुत प्रक्रिया है। नई शिक्षा नीति 2020 एवं (NCF) के अनुसार प्रभावी विद्यालय संस्कृति के निर्माण के लिए कई महत्वपूर्ण घटक आवश्यक हैं-

1. साझा दृष्टि और उद्देश्य का निर्धारण- जहाँ प्रधानाचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी और अभिभावक एक समान उद्देश्य के तहत मिलकर कार्य करें। शिक्षा का उद्देश्य महज़ परीक्षा में सफलता नहीं,बल्कि विद्यार्थियों को रचनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और 21वीं सदी के जीवन कौशलों से सशक्त बनाना है।
2. संवैधानिक मूल्य- समता, समानता, संवेदनशीलता, सहिष्णुता, न्याय और मानवाधिकार को व्यवहार में शामिल करना अनिवार्य है। विद्यालय में हर निर्णय और कार्य नैतिकता और इन मूल्यों पर आधारित हो।
3. विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाना- जिसमें परियोजना आधारित संवादात्मक और अनुभवात्मक शिक्षण शामिल हो, जिससे विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमता के अनुरूप सीखने में अधिक सक्रिय बनें।
4. शिक्षक-विद्यार्थी के आपसी रिश्ते एवं एक दूसरे की भूमिका- जहां शिक्षक न केवल ज्ञान देने वाले बल्कि प्रेरक और मार्गदर्शक भी बनने के लिए उत्तरदायी हों।
5. समता और समावेशिता को सुनिश्चित करना- ताकि हर बच्चा बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्राप्त कर सके।
6. अभिभावकों और समुदाय की सहभागिता- विद्यालय केवल एक शिक्षण संस्था के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक सामाजिक सहभागिता संस्थान के रूप में दिखें।
7. निरंतर मूल्यांकन और वैचारिक साझाकरण, जिससे सीखने की प्रक्रिया लगातार सुधारती रहे।

प्रक्रिया: सन्दर्भ व्यक्ति समूह में नीचे दी गई गतिविधि करवाएं, संभागियों को 8 समूह में बांटे एवं प्रत्येक को नीचे दिये गये बिन्दुओं में से कोई एक बिन्दु दें।

संभागियों को ऊपर दिये गये सातों बिन्दुओं से जुड़ी विषयवस्तु पढ़ने के लिए दें जो विद्यालय स्तर पर एक बेहतर संस्कृति निर्माण मे आवश्यक भूमिका निभाने वाले कारक और घटक हो सकते हैं। उसके बाद प्रत्येक समूह से सन्दर्भ व्यक्ति प्रस्तुतीकरण के दौरान दिये गये बिन्दु पर निम्न प्रश्नों के आधार पर चर्चा करें एवं प्रत्येक समूह के प्रस्तुतीकरण पर उपर दिये गये 7 घटकों को उभारने का प्रयास करें। विद्यालय में इन घटकों की सुनिश्चिता ही बेहतर संस्कृति को विकसित करने के लिए एक प्रभावी कदम होगा।

संभागियों के लिए प्रश्न— Group Discussion Question

1. बेहतर संस्कृति निर्माण के लिए कुछ आवश्यक घटक दिये गये हैं, आपके समूह में दिये गये बिन्दु पर आप इनमें से किन घटकों को सुनिश्चित कर सकेंगे और कैसे?
2. आपको क्यों लगता है कि इन घटकों का क्रियान्वयन स्कूल में होना जरूरी है? क्या आप इनमें कुछ अन्य बिन्दु भी समाहित करना चाहेंगे?
3. आपका समूह स्कूल स्तर पर इसके लिए किस तरह की योजना सुझाता हैं।

उपर दिये गये प्रश्न, सातों घटकों पर आधारित विषयवस्तु का प्रिन्ट प्रत्येक समूह को दें, ध्यान रहे प्रत्येक समूह को ग्रुप टास्क के लिए आठ बिन्दु में से एक ही बिन्दु पर कार्य करना है।

उपसमूह गतिविधि- Task

1- कक्षा की प्रक्रियाएं,
2- प्रात कालीन सभा का संचालन
3- समुदाय की भागीदारी
4- विद्यालय का वातावरण, स्वच्छता,सफाई उत्तरदायित्व
5- आकलन की प्रक्रियाए
6- विद्यार्थियों की भागीदारी
7- पुस्तकालय,पढ़ने के मंच
8- मिड—डे मील

समेकन:

विद्यालय में बेहतर संस्कृति का निर्माण केवल एकदिवसीय प्रयास नहीं, बल्कि एक सतत प्रक्रिया है, जिसमें सभी सदस्य – प्रधानाचार्य, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक और समुदाय – मिलकर भागीदारी करते हैं।

NEP-2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढाँचा (NCF) के अनुसार प्रभावी कार्य-संस्कृति के लिए सात महत्वपूर्ण घटक हैं –

- **साझा दृष्टि और उद्देश्य,**
- **संवैधानिक मूल्य और नैतिकता,**
- **विद्यार्थी -केंद्रित शिक्षण पद्धति,**
- **सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध,**
- **समता और समावेशिता,**

- **सहभागिता एवं साझी जिम्मेदारी**
- **निरंतर मूल्यांकन।**

सत्र में संभागियों ने यह समझा कि कैसे इन घटकों को विद्यालय की दैनिक प्रक्रियाओं में व्यवहारिक रूप से लागू किया जा सकता है। उदाहरण स्वरूप –कक्षा में परियोजना/प्रोजेक्ट वर्क आधारित शिक्षण से विद्यार्थियों की रुचि और रचनात्मकता को बढ़ावा देना, प्रात:कालीन सभा में समावेशी विचार-विमर्श का आयोजन कर सभी की भागीदारी सुनिश्चित करना, समुदाय के साथ मिलकर विद्यालय को सामाजिक केंद्र के रूप में स्थापित करना,इसके साथ-साथ, पुस्तकालय और पठन फोरम में विविध पुस्तकें उपलब्ध कराना, ताकि संवेदनशीलता, न्याय और मानवाधिकार जैसे संवैधानिक मूल्यों से जुड़े विविध साहित्यिक सामग्री पढ़ सकें, विविध रचनाओं को पढ़ने एवं उन पर संवाद करने से वे परस्पर संवेदनशीलता,ज्ञान का साझा करण जैस पक्षों को समझ सकें । ये सभी पहलू विद्यार्थियों के व्यवहार में सहज रूप से समाहित हो सकेंगे ।

सभी प्रयासों में शिक्षक और अभिभावक मिलकर विद्यार्थियों को प्रेरित करें ताकि वे अपने विचार साझा कर सकें। आत्म-मूल्यांकन कर सकें और सामाजिक जिम्मेदार नागरिक बन सकें। **हमारी जिम्मेदारी है कि हम इन सात घटकों को व्यवहार में उतारकर एक बेहतर और स्थायी कार्य-संस्कृति का निर्माण करें।**

सत्र : 11 विद्यालय रूपान्तरण

समय : 90 मिनट

अवधारणा:

यह सत्र संभागियों को इस प्रशिक्षण और उसमें उनके सीखने की यात्रा का मूल्यांकन करने, अपनी योजनाओं को साझा करने और आगे के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करने का अवसर प्रदान करेगा। इसका उद्देश्य न केवल प्रशिक्षण को संपादित करना है, बल्कि सभी को एक सामूहिक मिशन से जोड़ना है।

उद्देश्य:

- संभागियों को अपने व्यक्तिगत और सामूहिक सीखने का मूल्यांकन करने में मदद करना।
- सभी संभागियों को अपने विद्यालय के लिए एक ठोस और व्यावहारिक कार्ययोजना बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- संभागियों को प्रेरित करना कि वे इस मॉड्यूल के सिद्धांतों को अपने विद्यालयों में व्यावहारिक रूप से कैसे लागू करेंगे।
- सामूहिक रूप से एक बेहतर शिक्षा प्रणाली के निर्माण के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त करना।

आवश्यक सामग्री: चार्ट पेपर/फ्लिपचार्ट, मार्कर पेन व कार्ययोजना प्रपत्र

गतिविधि

चरण 1: सीखने का पुनरावलोकन (15-20 मिनट)

संदर्भ व्यक्ति समूह को छोटे-छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह से पूछें कि इस प्रशिक्षण से उन्होंने सबसे महत्वपूर्ण बात क्या सीखी और उन्हें कौन-सा पहलू सबसे अधिक प्रेरक लगा आपसी विचार विमर्श कर चार्ट/ पेपर पर लिखने को कहे उसके पश्चात् प्रत्येक समूह अपनी चर्चा के निष्कर्षों को सबके साथ साझा करें।

चरण 2: व्यक्तिगत कार्ययोजना का निर्माण (25-30 मिनट)

सभी संभागियों को "मेरी विद्यालय के लिए कार्ययोजना" नामक एक प्रपत्र दें जिसमें उन्हें अपनी कार्ययोजना में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल करने को कहें:

- लक्ष्य: आप अपने विद्यालय में क्या बदलाव लाना चाहते हैं? (उदाहरण: मूल्य-आधारित वातावरण, संवैधानिक मूल्यों का समावेश)
- कार्य: इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आप कौन-से तीन प्रमुख कार्य करेंगे? (उदा. प्रार्थना सभा में नैतिक कहानियों को शामिल करना, शिक्षकों के लिए एक मासिक चर्चा मंच बनाना)
- समय-सीमा: इन कार्यों को कब तक पूरा करने की योजना है?

चरण 3: बनाई गए योजना को निम्न संकेतकों के आधार पर आकलन करने को कहें व कुछ संभागियों को अपनी कार्ययोजना प्रस्तुत करने को कहें।

सत्र के अंत में, सभी संभागियों को एक साथ खड़े होकर एक सामूहिक शपथ लेने के लिए प्रेरित करें, जिसमें वे शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र और मूल्यों को बढ़ावा देने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराएँ। यह एक बहुत ही भावनात्मक और प्रेरणादायक क्षण हो सकता है।

संकेतक

मूल्य-आधारित वातावरण: विद्यालय केवल पढ़ाई का स्थान न रहकर, राष्ट्रीय मूल्यों और चरित्र निर्माण का एक जीवंत केंद्र बन जाएगा। प्रार्थना सभा, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और दैनिक व्यवहार में समानता, सम्मान और सहयोग की भावना साफ नज़र आएगी।

- साझा जिम्मेदारी: विद्यालय में एक ऐसी कार्य-संस्कृति विकसित होगी जहाँ शिक्षक, विद्यार्थी , अभिभावक और प्रशासन मिलकर काम करेंगे, जिससे एक साझा जिम्मेदारी का माहौल बनेगा।
- संवैधानिक मूल्यों का समावेश: विद्यालय का परिवेश ऐसा बनेगा जहाँ न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्य केवल किताबों में नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के आचार-विचार में दिखेंगे।

विद्यार्थियों में दिखने वाले बदलाव

- समग्र व्यक्तित्व का विकास: विद्यार्थी सिर्फ़ अकादमिक रूप से ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक रूप से भी परिपक्व होंगे।
- सकारात्मक नागरिकता: विद्यार्थी जिम्मेदार, ईमानदार, लोकतांत्रिक और सेवाभावी नागरिक बनेंगे। उनमें सत्यनिष्ठा, अनुशासन, पारदर्शिता और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होंगे।
- सक्रिय सहभागिता: विद्यार्थी कक्षा और विद्यालय की गतिविधियों में अधिक सक्रिय और सहभागी होंगे, क्योंकि उन्हें पता होगा कि उनकी राय और योगदान महत्वपूर्ण है।
- नेतृत्व क्षमता: विद्यालय राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए उपयोगी संस्थान के रूप में विकसित होगा, जहाँ विद्यार्थी छोटे-छोटे प्रोजेक्ट्स से लेकर सामुदायिक कार्यों तक में कुशलता व संवेदनशीलता से नेतृत्व करना सीखेंगे।

शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में बदलाव

- अनुभवात्मक शिक्षण: शिक्षण केवल व्याख्यान तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि अनुभव-आधारित और प्रोजेक्ट-आधारित होगा। शिक्षक गतिविधियों, चर्चाओं और कहानियों के माध्यम से मूल्यों को सिखाएंगे।
- शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन: शिक्षक केवल विषय पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र और व्यवहार को गढ़ने वाले प्रेरणास्रोत (Role Model) बनेंगे। वे अपने आचरण से ही विद्यार्थियों को ईमानदारी, समयनिष्ठा और सेवा-भाव सिखाएंगे।
- सतत मूल्यांकन: विद्यार्थियों का मूल्यांकन केवल अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि उनके पोर्टफोलियो, व्यवहार और टीम-वर्क जैसे गुणों के आधार पर भी होगा।

सेवा-भाव आधारित राष्ट्रीय नेतृत्व का केंद्र बनेंगें विद्यालय

सेवा-भाव केवल व्यक्तिगत गुण नहीं है बल्कि राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय नेतृत्व की आधारशिला है। जब व्यक्ति और संस्थाएँ सेवा को विनम्रता, करुणा और उद्देश्यपूर्ण योगदान के रूप में अपनाती हैं, तो यह राष्ट्र निर्माण की दिशा में सामूहिक शक्ति बन जाती है। विद्यालयों में सेवा-भाव की संस्कृति विकसित करना आने वाली पीढ़ियों में जिम्मेदारी, सहयोग और करुणामय नेतृत्व की नींव डालना है।

उद्देश्य

- विद्यालय नेतृत्व को सेवा-भावी राष्ट्रीय चरित्र निर्माण से जोड़ने के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थियों और शिक्षकों में समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।

- सेवा-आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यों का केंद्र बनाना।
- विद्यालय, परिवार और समुदाय को मिलाकर राष्ट्र के लिए साझा योगदान की संस्कृति विकसित करना।

सेवा-भाव के राष्ट्रीय संदर्भ में आयाम

1. **दार्शनिकता (Philosophy of Service):** देशहित को सर्वोपरि मानते हुए हर कार्य में विनम्र सेवा भाव रखना।
2. **करुणामय दृष्टिकोण (Compassionate Approach**): शिक्षा और नेतृत्व का लक्ष्य केवल परिणाम नहीं बल्कि राष्ट्रीय कल्याण हो यह भाव विकसित करना ।
3. **मूल कारणों पर ध्यान (Root Cause Focus**): सामाजिक–राष्ट्रीय समस्याओं को गहराई से समझकर समाधान ढूँढना।
4. **समुदाय सशक्तिकरण (Community Empowerment):** विद्यालय को राष्ट्रीय नेतृत्व और सामूहिक जिम्मेदारी का प्रशिक्षण केंद्र बनाना।

सेवा-भाव आधारित विद्यालय–राष्ट्र गतिविधियों के उदाहरण

- **सेवा सप्ताह (Seva Week):** राष्ट्रीय एकता और जिम्मेदारी पर केंद्रित गतिविधियाँ (स्वच्छता अभियान, पुस्तक दान, वृक्षारोपण, रक्तदान शिविर)।
- **सामुदायिक सेवा परियोजना:** स्थानीय समस्याओं (जल संरक्षण, शिक्षा अभियान, स्वास्थ्य जागरूकता) को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं से जोड़कर हल करना।
- **विद्यार्थी सेवा क्लब:** सहपाठी सहयोग, डिजिटल साक्षरता, पर्यावरण जागरूकता, राष्ट्रीय पर्वों पर सेवा गतिविधियाँ।

समेकन:

सेवा-भाव विद्यालय संस्कृति को केवल मानवीय मूल्यों से नहीं जोड़ता बल्कि उसे राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का हिस्सा बनाता है। जब विद्यालय सेवा-भाव की संस्कृति अपनाते हैं, तो वे केवल विद्यार्थियों का नहीं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र का भविष्य गढ़ते हैं।

स्वयं को पाने का सबसे अच्छा तरीका है – स्वयं को दूसरों की सेवा में खो देना।

अब्राहिम लिंकन का पत्र

शिक्षक के नाम

शिक्षणालय के गुरुदेव...
सभी आदमी न्यायप्रिय नहीं होते,
होते नहीं सब सत्यनिष्ठ !
मेरा बेटा सीखेगा यह
कभी-न-कभी !
मगर उसे यह भी सिखाइए
दुनिया में हर बदमाश की तरह,
होता है एक साधुचरित पुरुषोत्तम भी।
स्वार्थी राजनीतिज्ञ होते हैं दुनिया में जैसे,
होते हैं उसी तरह पूरी जिन्दगी निछावर करने वाले नेता भी।
तो मेहरबान मित्र भी होते हैं।
मैं जानता हूँ
सभी बातें झटपट नहीं सिखाते बनतीं....
फिर भी, हो सके तो उसके मन में जमाइए,
"पसीना बहाकर कमाया हुए एक पैसा भी
फोकट में मिले खजाने से ज्यादा मूल्यवान है।"
सिखाइए उसे कैसे झेलते हैं हार
और सिखाइए, जीत की खुशी में संयम।
अगर आप में ताकत हो तो
सिखाइए उसे ईर्ष्या और द्वेष से दूर रहना।
सिखाइए उसे
अपना हर्ष भी संयम से दिखाना।
कहना, गुंडों से मत डर जाना,
क्योंकि सबसे आसान होता है
उन्हें झुकाना।
जितना बन पड़े दिखाया कीजिए उसे
किताबों में छिपा अद्भूत खजाना,
पर साथ-ही-साथ
दीजिए उसके जी को जरा फुरसत
कि सृष्टि की सनातन सुन्दरता महसूस कर पाए।
देख पाए वह
चिडियों की ऊंची उडान....
सुनहली धूप में मंडराते भौंरें....
और हरी भरी पहाडी की ढलान पर
झूमते नन्हें-नन्हें फूल।
पाठशाला में उसे सबक मिले:
"बेईमानी से पाई सफलता से
हजार अच्छी है असफलता।"
यह सिखाइए कि
अपने विचारों और अपनी सूझ-बूझ पर
पक्का विश्वास रखे,
भले ही सब लोग उसे गलत ठहराए।
वह भलों के साथ मलाई बरते और
टेढ़ों को सबक सिखाए।
मेरे बेटे को विश्वास दीजिए कि
विजय के झंडे के नीचे खड़े होने को दौड़ती भीड़ में
शामिल न होने का साहस जुटाए
और यह भी समझाइए उसे
कि सुने सबकी, हर एक की...
पर छान ले उसे सत्य की छलनी में,
और छिलका फेंककर
ग्रहण करे विशुद्ध सार।
बन पड़े तो उतारिए उसके मन में:
"हँसते रहे हृदय का दुख दबाकर।"
कहिए कि आँसू बहाते शरमाए नहीं वह...
सिखाइए उसे,
औछेपन को ओछा मानना
और चाटुकारों से सावधान रहना।
उसे पक्की पूरी तरह समझाइए कि
खूब कमाई करे ताकत और अक्ल की लागत से,
लेकिन कभी भी न बेचे अपना हृदय, अपनी आत्मा
धिक्कारती हुई आती है भीड़ अगर,
तो अनदेखा करना सिखाइए उसे,
और लिखिए उसके हृदय पर
जो सत्य जान पड़े, न्यायोचित लगे
उसकी खातिर धरती में गड़ाकर पांव लड़ता रहे
अंत तक।
उसे ममता दीजिए मगर
लाड़ करके मत बिगाड़िए।
आग में जल-तपकर निकले बिना
लोहा मजबूत फौलाद नहीं बनता।
उसे आदत डालिए कि
अधीर होने का धीरज संजोए,
और धीरज से काम ले वह
अगर दिखानी है बहादुरी...
हमें विश्वास चाहिए स्वयं का मजबूत
तभी जमेगी उदात्त श्रद्धा मनुष्य जाति के प्रति।
क्षमा कीजिए गुरू जी,
मैं बहुत बोल रहा हूँ,
बहुत कुछ मांग रहा हूँ...
फिर भी देखिए... जितना बने, कीजिए जरूर।

कार्यशाला के छायाचित्र

नैतिकता, मानवीय एवं संवैधानिक मूल्य जैसे सहानुभूति, सम्मान, लोकतांत्रिक भावना, स्वतंत्रता, समानता और न्याय आदि की नींव बचपन से ही रखना उत्तरदायी नागरिकता के लिए आवश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान राजस्थान (जयपुर)